वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 274
ISBN 978-93-80353-07-4

कर्मदहन विधान

–रचयित्री–

जम्बूद्वीप रचना की पावन प्रेरिका
गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

जम्बूद्वीप रचना रजत जयंती महोत्सव–2010 एवं
शांतिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं तीर्थंकरत्रय महामस्तकाभिषेक
महोत्सव (11 से 21 फरवरी 2010) के पावन प्रसंग पर प्रकाशित

-प्रकाशक-
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र. फोन नं.- (01233) 280184, 292943
Website : www.jambudweep.org
E-mail : ravindrajain@jambudweep.org

COURTESY–JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2536	मूल्य
1100 प्रतियाँ	फरवरी 2010	28/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

प्रवचनसार ग्रंथ में आचार्य श्री कुन्दकुन्द ने कहा है-

जीव के शुभ, अशुभ परिणाम ही उसे तदनुसार फल प्रदान करते हैं। अशुभोपयोग से यह जीव तिर्यंच, नारकी एवं कुमानुष होकर सहस्रों दुःखों को सहन करता हुआ संसार परिभ्रमण करता है और धर्म से परिणत होकर शुभोपयोग से स्वर्ग सुख और शुद्धोपयोग से निर्वाण प्राप्त कर लेता है।

जीव के जब जन्म-जन्मान्तरों का पुण्य संचित होकर एक साथ उदय में आता है तो जिनधर्म एवं जिनवाणी सुनने का साधन प्राप्त होता है जिससे शुभोपयोग में जीव का समय व्यतीत होता है अन्यथा तो सभी संसारी प्राणी दिन रात अशुभोपयोग अर्थात् पाप क्रियाओं में संक्लेशित रहकर अपार कष्ट उठाते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि अशुभोपयोग से बचने के लिए प्रत्येक श्रावक को भगवान की भक्ति, पूजा, स्तोत्र पाठ, तीर्थयात्रा आदि करना चाहिए जो शुभोपयोग के अंग हैं। कुन्दकुन्दाचार्य के अनुसार श्रावक के लिए दान और पूजन दोनों आवश्यक कर्तव्य हैं। जिसमें पूजा के अन्तर्गत नित्य पूजाओं के अतिरिक्त नैमित्तिक पूजाओं में अनेकानेक मण्डल विधानादि की पूजाएँ की जाती हैं।

वर्तमान समय में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने सर्वप्रथम बालब्रह्मचारिणी के रूप में दीक्षा लेकर साहित्य लेखन का अनुपमेय कार्य किया जिसको हजारों वर्षों तक विस्मृत नहीं किया जा सकता है। अनेकों वृहद् विधान एवं लघु विधानों की धूम आज भारत के कोने-कोने में है। उन्हीं लघु विधानों की शृँखला में यह नूतन कृति ''कर्मदहन विधान'' है। इस विधान के माध्यम से भक्तजन प्रभु भक्ति का दिव्य स्रोत प्रवाहित कर कर्मनिर्जरा करते हुए पुण्य का बंध करें, यही जिनेन्द्र भगवान से मंगल प्रार्थना है।

卐

प्रस्तावना

–ब्र.कु. इन्दू जैन (संघस्थ)

कर्मों के उदय से ही यह प्राणी इस संसार परिभ्रमण के चक्र में भ्रमता रहता है और जब कभी उत्तम कुल, उच्च गोत्र, उत्तम शरीर आदि की प्राप्ति के बाद भी महान पुण्य का उदय आता है तब कहीं जाकर इन कर्मों को नष्ट करने का प्रयत्न करता है और जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर क्रमशः संसार परिभ्रमण को कम करते हुए एक दिन शाश्वत सुख की प्राप्ति कर लेता है।

ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तराय के भेद से कर्म आठ प्रकार का है इनके प्रभेद करने पर अर्थात् ज्ञानावरण के 5, दर्शनावरण के 9, वेदनीय के 2, मोहनीय के 28, आयु के 4, नामकर्म के 93, गोत्र के 2 और अन्तराय के 5 ऐसे अलग-अलग भेद करने पर यह 148 कर्म हो जाते हैं, इनके असंख्यात लोक प्रमाण भी भेद होते हैं। इन मुख्य आठ कर्मों में ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अंतराय ये घातिया कर्म हैं और आयु, नाम, गोत्र और वेदनीय यह अघातिया कर्म हैं। इनमें जो घातिया कर्म हैं, वे जीव के अनुजीवी (आत्मा के साथ सतत रहने वाले) गुणों का घात करते हैं और अघातिया कर्म जली हुई रस्सी के समान रहते हुए भी जीव के अनुजीवी गुणों का घात नहीं करते हैं। जिन्होंने कर्मों की त्रेसठ प्रकृतियों के नाशपूर्वक चार घातिया कर्मों का नाश कर लिया वे कहलाए अर्हंत परमेष्ठी और जिन्होंने पहले कर्मों की त्रेसठ प्रकृति, पुनः चौदहवें गुणस्थान में 72 प्रकृतियाँ नष्ट कीं और अंत समय में तेरह प्रकृतियों का नाश किया और कृतकृत्य हो सिद्धशिला पर जाकर विराजमान हो गये, वह कहलाए सिद्ध परमेष्ठी।

आज पंचमकाल में हम भले ही कर्मों की 148 प्रकृतियों का नाशकर सिद्ध अवस्था को नहीं प्राप्त कर सकते परन्तु मुनि, आर्यिका आदि दैगम्बरी दीक्षा को धारण कर उस कर्मशृँखला को काटने का सद्प्रयास तो कर ही सकते हैं और अगर उतना भी धारण करने की शक्ति हमारे अंदर नहीं है तो शास्त्रों में आचार्यों ने तीर्थंकर भगवन्तों की भक्ति पूजा द्वारा अपनी कर्मनिर्जरा करने का एक सुन्दर उपाय हमें बताया है।

इस पंचमकाल में रहते हुए भी हम पुण्यशाली हैं कि जो हमें पूजा-विधान के माध्यम से उन भगवन्तों की भक्ति करने का सरल माध्यम जैन समाज की

सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने प्रदान किया है जिसके लिए जैन समाज सदैव उनका ऋणी रहेगा। आज उनकी लेखनी से निःसृत अनेकानेक लघु, वृहद् विधानों द्वारा भक्तजन अपनी कर्मनिर्जरा करते देखे जाते हैं। उन्हीं विधानों की शृँखला में यह कर्मदहन विधान नामक अनुपम कृति है, जिसमें सर्वप्रथम सिद्ध भगवन्तों की वंदना और सिद्ध भगवान की पूजा है। पुनः आठ वलयों में प्रथम वलय में ज्ञानावरण को नष्ट करने वाले सिद्धों के 5 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य, द्वितीय वलय में 9 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य, तृतीय वलय में 2 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य, चतुर्थ वलय में 28 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य, पंचम वलय में 4 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य, षष्ठम वलय में 93 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य, सप्तम वलय में 2 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य और अष्टम वलय में 5 अर्घ्य और 3 पूर्णार्घ्य हैं। इस प्रकार कुल 148 अर्घ्य और 10 पूर्णार्घ्य हैं। इनके पश्चात् सिद्धों के 8 गुणों से समन्वित सिद्ध पूजा है, जिसमें 8 अर्घ्य और 1 पूर्णार्घ्य हैं तथा इस विधान में सारभूत दो जयमालाएँ हैं, जिसमें कैसे-कैसे कितनी प्रकृतियों का नाशकर सिद्ध अवस्था प्राप्त करते हैं तथा सिद्ध भगवान जहाँ विराजमान रहते हैं उस सिद्ध शिला का सुन्दर वर्णन है।

इन पूजा-विधान के पश्चात् कर्मदहन व्रत की विधि है जिसे करके भी भक्तजन अपने कर्मों की निर्जरा कर सकते हैं। इस प्रकार यह विधान प्रत्येक करने-कराने वालों के लिए मंगलकारी हो और शीघ्र ही उनकी कर्मशृँखला को दहन करने में निमित्तभूत बने, यही मंगल भावना है।

卐

विधान की रचयित्री, परमपूज्य गणिनीप्रमुख

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान—टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि—आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991(सन् 1934)

गृहस्थ का नाम—कु. मैना

माता-पिता—श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत—ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।

क्षुल्लिका दीक्षा—चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में।

आर्यिका दीक्षा—वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व—अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा—हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा— भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काक्न्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा निर्माण की प्रेरणा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा—पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा—'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा—जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 में हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं–

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है–कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना एवं नवग्रहशांति जिनमंदिर।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना से समन्वित हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं शारीरिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खी बावली, दिल्ली।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरभ वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली

नवदेवता पूजन

—गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

—गीता छन्द —

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालय-समूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अथाष्टक —

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नवसु चढ़ायके।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्या मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।**
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

***जाप्य –*ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

–सोरठा –

चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।1।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति......)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।2।।
आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।

जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।3।।
जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।4।।
जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।5।।
जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।6।।
नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।7।।

दोहा – **नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।**
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं........।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।9।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री कर्मदहन विधान

मंगलाचरण

–शेर छंद –

सिद्धों को नमूँ हाथ जोड़ शीश नमा के।
ये सिद्धि सौख्य दे रहे हैं पाप नशाके।।
अर्हंतदेव को नमूँ ये मुक्ति के नेता।
आचार्य उपाध्याय साधु धर्म प्रणेता।।1।।

ये साधु कर्म नाशने में बद्ध कक्ष हैं।
अर्हंतदेव चार घातिकर्म मुक्त हैं।।
सिद्धों ने सर्व कर्म को निर्मूल कर दिया।
कृतकृत्य हुये लोक अग्रभाग पा लिया।।2।।

ज्ञानावरण के पाँच भेद शास्त्र में गाये।
नव भेद दर्शनावरण के साधु बतायें।।
दो वेदनीय मोहनीय भेद अठाइस।
आयू के चार नामकर्म त्र्यानवे कथित।।3।।

दो गोत्र अंतराय पाँच आर्ष में गाये।
सब एक सौ अड़तालिस हैं भेद बताये।।
इन सबको नाश करके ही सिद्ध कहाते।
हम सिद्ध वंदना से भव दुख को मिटाते।।4।।

मैं कर्मदहन पूजा रचना करूँ अभी।
वसुकर्मनाश होवें यह भावना अभी।।
जब तक न मोक्ष पाऊँ सिद्धों की है शरण।
प्रतिक्षण समय-समय भी हो सिद्ध स्मरण।।5।।

अथ विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री कर्मदहन पूजा

–अथ स्थापना (शंभु छंद) –

हे सिद्ध प्रभो! तुम आठ कर्म, विरहित गुण आठ समन्वित हो।
अष्टमि पृथिवी पर तिष्ठ रहे, ज्ञानाम्बुधि सिद्धरमापति हो।।
समतारस आस्वादी मुनिगण, नित सिद्ध गुणों को ध्याते हैं।
हम पूजें तुम आह्वानन कर, जिससे सब कर्म नशाते हैं।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-शंभु छंद –

श्री सिद्धसुयश सम उज्ज्वल जल, लेकर झारी भर लाये हैं।
निज समरस सुख पाने हेतू, प्रभु चरण चढ़ाने आये हैं।।
इक सौ अड़तालिस प्रकृति नाश, त्रैलोक्य शिखर पर जा पहुँचें।
ऐसे सिद्धों की पूजा कर, हम भी श्रीसिद्ध निकट पहुँचें।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध गुणों सम अति शीतल, चंदन घिसकर ले आये हैं।
निज की शीतलता पाने को, प्रभु चरण चढ़ाने आये हैं।।
इक सौ अड़तालिस प्रकृति नाश, त्रैलोक्य शिखर पर जा पहुँचें।
ऐसे सिद्धों की पूजा कर, हम भी श्रीसिद्ध निकट पहुँचें।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध सौख्य सम खंडरहित, उज्ज्वल तंदुल ले आये हैं।
निज आत्म सौख्य पाने हेतू, प्रभु पुंज चढ़ाने आये हैं।।
इक सौ अड़तालिस प्रकृति नाश, त्रैलोक्य शिखर पर जा पहुँचे।
ऐसे सिद्धों की पूजा कर, हम भी श्रीसिद्ध निकट पहुँचें।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्धगुणों सम अति सुगंध, पुष्पों को चुनकर लाये हैं।
निज गुण सुगंध पाने हेतू, प्रभु चरणों पुष्प चढ़ाये हैं।।
इक सौ अड़तालिस प्रकृति नाश, त्रैलोक्य शिखर पर जा पहुँचे।
ऐसे सिद्धों की पूजा कर, हम भी श्रीसिद्ध निकट पहुँचें।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध पुष्टि सम नानाविध, पकवान बनाकर लाये हैं।
निज आत्म तृप्ति पाने हेतू, प्रभु चरण चढ़ाने आये हैं।।
इक सौ अड़तालिस प्रकृति नाश, त्रैलोक्य शिखर पर जा पहुँचे।
ऐसे सिद्धों की पूजा कर, हम भी श्रीसिद्ध निकट पहुँचें।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध ज्ञान सम ज्योतिर्मय, कर्पूर जलाकर लाये हैं।
निज ज्ञानज्योति पाने हेतू, हम आरति करने आये हैं।।
इक सौ अड़तालिस प्रकृति नाश, त्रैलोक्य शिखर पर जापहुँचे।
ऐसे सिद्धों की पूजा कर, हम भी श्रीसिद्ध निकट पहुँचें।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध गुणों की सुरभि सदृश, वरधूप सुगंधित लाये हैं।
निज आत्म सुरभि पाने हेतू, अग्नी में धूप जलाये हैं।।

इक सौ अड़तालिस प्रकृति नाश, त्रैलोक्य शिखर पर जा पहुँचे।
ऐसे सिद्धों की पूजा कर, हम भी श्रीसिद्ध निकट पहुँचें।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध सुखामृत सदृश मधुर, रस भरे बहुत फल लाये हैं।
निज मोक्ष सुफल हेतू भगवन्! फल आज चढ़ाने आये हैं।।
इक सौ अड़तालिस प्रकृति नाश, त्रैलोक्य शिखर पर जा पहुँचे।
ऐसे सिद्धों की पूजा कर, हम भी श्रीसिद्ध निकट पहुँचें।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध गुणों के सम अनर्घ्य, यह अर्घ्य सजाकर लाये हैं।
निज तीन रत्न पाने हेतू, प्रभू चरण चढ़ाने आये हैं।।
इक सौ अड़तालिस प्रकृति नाश, त्रैलोक्य शिखर पर जा पहुँचे।
ऐसे सिद्धों की पूजा कर, हम भी श्रीसिद्ध निकट पहुँचें।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्त-श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

श्री सिद्ध चरणाब्ज, मन से जलधारा करूँ।
पूर्ण शांति साम्राज्य, मिले त्रिजग में शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

श्री सिद्ध चरणाब्ज, पुष्पांजलि मन से करूँ।
मिले सिद्धि साम्राज्य, त्रिभुवन की सुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (148 अर्घ्य)

–दोहा–

दुष्ट कर्म अरि नाश के, निज स्वतंत्र पद प्राप्त।
पुष्पांजलि कर पूजते, होवें निजगुण प्राप्त।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ प्रथमवलये (दले) पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(ज्ञानावरण के नाशक सिद्धपरमेष्ठी के 5 अर्घ्य)

–शंभु छंद–

मतिज्ञान भेद हैं तीन शतक, छत्तीस व संख्यातीते भी।
सबका आवरण विनाश किया, पाया निज का पद तुमने ही।।
निज के मतिज्ञान विकास हेतु, सिद्धों की पूजा करते हैं।
निज ज्ञानज्योति प्रगटित होवे, इस हेतू अर्चा करते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अभिनिबोधकवारक-विनाशकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पच्चीस भेद श्रुत ग्यारह अंग, अरु चौदह पूर्व कहाये हैं।
इन सबके भेद असंख्याते भी, श्रुत में मुनि ने गाये हैं।।
इनसे विरहित केवलज्ञानी, सिद्धों की पूजा करते हैं।
निज ज्ञानज्योति प्रगटित होवे, इस हेतू अर्चा करते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानावरणकर्मविमुक्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगविश्रुत अवधिज्ञान छह विध, या असंख्यात भेदों युत हैं।
सबका आवरण विनाश किया, इसलिए ज्ञान तुम अनवधि है।।
क्षयोपशम ज्ञान शून्य क्षायिक, ज्ञानी की पूजा करते हैं।
निज ज्ञानज्योति प्रगटित होवे, इस हेतू अर्चा करते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं असंख्यातलोकभेदभिन्न-अवधिज्ञानावरणकर्म-विमुक्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनपर्यय ज्ञान द्विविध उसमें, भी भेद असंख्याते मानें।
उन सब आवरण रहित सिद्धों, का पूर्ण ज्ञान त्रिभुवन जाने।।
मनपर्ययज्ञान प्राप्त हेतू सिद्धों की पूजा करते हैं।
निज ज्ञानज्योति प्रगटित होवे, इस हेतू अर्चा करते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं असंख्यप्रकारमनःपर्यय-ज्ञानावरणकर्मविमुक्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह द्रव्य अखिल पर्यायों को, यह केवलज्ञान जान लेता।
इसका आवरण विनाश किया, त्रिभुवन को एक साथ देखा।।
हम केवलज्ञान हेतु केवल, सिद्धों की पूजा करते हैं।
निज ज्ञानज्योति प्रगटित होवे, इस हेतू अर्चा करते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं निखिलगुणपर्याय-अवबोधककेवलज्ञानावरणविमुक्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

जो केवलज्ञान प्राप्त करके, त्रिभुवन को युगपत् जान रहे।
उत्पाद नाश अरु ध्रौव्य सहित, सब सिद्ध परम आनंद लहें।।
भवकारण सब विध्वंस किया, हम उनकी पूजा करते हैं।
निज ज्ञानज्योति प्रगटित होवे, इस हेतू अर्चा करते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं चिरतरसंसारकारण-अज्ञाननिर्धूत-केवलज्ञानातिशयसम्पन्न-श्री सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा –

नित्य निरंजन देव, अखिल अमंगल को हरें।
नित्य करूँ मैं सेव, मेरे कर्मांजन हरें।।1।।

अथ द्वितीयवलये (दले) पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(दर्शनावरण नाशक सिद्धपरमेष्ठी के 9 अर्घ्य)

–नरेन्द्र छंद –

चक्षूदर्शन वर्ण विषय की, सत्ता को अवलोके।
चक्षु इन्द्रियावरण क्षयोपशम से होता नीके।।
भेद असंख्यातों युत इनसे, रहित सिद्ध को ध्याऊँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भव भव व्याधि नशाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं चक्षुदर्शनावरणकर्मविमुक्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संस्पर्शन रसना व घ्राण, अरु श्रोत्रेन्द्रिय से होता।
यह अचक्षुदर्शन संसारी, सब जीवों के होता।।

इसका सब आवरण विनाशा, उन सिद्धों को ध्याऊँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भव भव व्याधि नशाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं अचक्षुदर्शनावरणकर्मविमुक्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

अवधिज्ञान के पहले अवधीदर्शन सद्दृष्टी को।
होता उसके आवरणों को नाश किया नत उनको।।
क्षयोपशम दर्शन से विरहित, सब सिद्धों को ध्याऊँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भव भव व्याधि नशाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं अवधिदर्शनावरणकर्मविमुक्तायश्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत भविष्यत् वर्तमान की, द्रव्य व पर्यायों को।
युगपत् देखे केवलदर्शन, नमूँ सदा मैं इसको।।
केवलदर्शन रज को नाशा, उन सिद्धों को ध्याऊँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भव भव व्याधि नशाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं केवलदर्शनावरणकर्मविमुक्तायश्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चलते बैठे अथवा सोते, जन ले लेते निद्रा।
इसके वश में सब संसारी, महारोग यह निद्रा।।
जिनने नाशा स्वात्मध्यान से, उन सिद्धों को ध्याऊँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भव भव व्याधि नशाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं निद्राकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐसा सोवे कोई जगावे, नेत्र खोल नहिं पावे।
निद्रा निद्रा कर्म उदय से, ऐसी नींद सतावे।।
इसको नाशा आत्मध्यान से, उन सिद्धों को ध्याऊँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भव भव व्याधि नशाऊँ।।6।।

ॐ ह्रीं निद्रानिद्राकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किंचित् आंख खुली भी सोवे, कुछ कुछ जगता रहता।
प्रचला हल्की निद्रा फिर भी, ज्ञानशून्य ही रहता।।
निज आतम अनुभव से नाशा, उन सिद्धों को ध्याऊँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भव भव व्याधि नशाऊँ।।7।।

ॐ ह्रीं प्रचलाकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐसी निद्रा लार बहे अरु, अंग चलाचल होते।
प्रचलाप्रचला नींद सतावे, गाढ़ नींद में सोते।।
स्वात्मसुधारस पीकर नाशा, उन सिद्धों को ध्याऊँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भव भव व्याधि नशाऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं प्रचलाप्रचलाकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोते में बोले उठकर कुछ, कार्य करे फिर सोवे।
फिर भी भान रहे ना कुछ भी, ऐसी निद्रा होवे।।
नाश किया स्त्यानगृद्धि यह, उन सिद्धों को ध्याऊँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भव भव व्याधि नशाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धिकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पूर्णार्घ्य –

केवलदर्शन सकल विमल है, युगपत् तिहुंजग देखे।
इस आवरण रहित सिद्धों को, जजत निजातम देखें।।
निज शुद्धातम अनुभव हेतू, सब सिद्धों को ध्याऊँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भव भव व्याधि नशाऊँ।।10।।

ॐ ह्रीं सकलदर्शनावरणकर्मविमुक्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा –

राग द्वेष मद मोह को, जीत हुए जिन 'ख्यात'।
पुष्पांजलि चरणों करूँ, जजूँ नमाकर माथ।।1।।

अथ तृतीयवलये (दले) पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(वेदनीयनाशक सिद्धपरमेष्ठी के 2 अर्घ्य)

–शेरछंद –

भोजन वसन स्त्री सुगंध द्रव्य सुख करें।
साता उदय से जीव इन्हें प्राप्त ही करें।।
इस कर्म को विनाश पूर्ण सौख्य जो धरें।
उन सिद्धों को जजें निजात्म सौख्य को भरें।।1।।

ॐ ह्रीं सातावेदनीयकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरि शस्त्र विषादिक अनिष्ट वस्तुएं सभी।
होती असाता के उदय से दुःखदायि भी।।
इस कर्म को विनाश पूर्ण सौख्य जो धरें।
उन सिद्धों को जजें निजात्म सौख्य को भरें।।2।।

ॐ ह्रीं असातावेदनीयकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

संसार में साता व असाता से जीव ये।
सुख दुःख भोगते हैं वेदनीय कर्म से।।
इस कर्म को विनाश पूर्ण सौख्य जो धरें।
उन सिद्धों को जजें निजात्म सौख्य को भरें।।3।।

ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा –

स्वात्म सौख्य पीयूष रस, निर्झरणी वच आप।
पुष्पांजलि से पूजते, मिटे सकल संताप।।1।।

अथ मंडलस्योपरि चतुर्थवलये (दले) पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(मोहनीय नाशक सिद्धपरमेष्ठी के 28 अर्घ्य)

–स्रग्विणी छंद –

कर्म मिथ्यात्व से आत्म श्रद्धा न हो।
नाश के आप ही सिद्ध आत्मा हुए।।
नाथ! सम्यक्त्व दीजे मुझे आज ही।
मैं जजूँ भक्ति से एक ही स्वार्थ है।।1।।

ॐ ह्रीं मिथ्यात्वकर्मविमुक्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्य झूठे पदार्थादि में जो रूची।
मिश्र को नाश के सिद्ध आत्मा हुए।।
तीसरे भाव को नाश कीजे प्रभो!
मैं जजूँ भक्ति से एक ही स्वार्थ है।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यग्मिथ्यात्वकर्मविमुक्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध सम्यक्त्व ना हो मलिन दोष हों।
आप सम्यक् प्रकृति नाश के सिद्ध हो।।
चल मलिन दोष से शून्य सम्यक्त्व दो।
मैं जजूँ भक्ति से एक ही स्वार्थ है।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वप्रकृतिमिथ्यात्वकर्मविमुक्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अनंतों भवों का कहा हेतु है।
ये अनंतानुबंधी महाक्रोध है।।
नाश के सिद्ध हो सिद्ध मैं भी बनूँ।
मैं जजूँ भक्ति से एक ही स्वार्थ है।।4।।

ॐ ह्रीं अनंतानुबंधि-क्रोधकर्मविमुक्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान मिथ्यात्व सहचारि संसार में।
नाश के आप मुक्त्यंगना को वरी।।
स्वाभिमानी बनूँ स्वात्मसंपद् भरूँ।
मैं जजूँ भक्ति से एक ही स्वार्थ है।।5।।

ॐ ह्रीं अनंतानुबंधि-मानकर्मविमुक्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंचना नाम माया से तिर्यग्गती।
ये अनंतानुबंधी भ्रमावें यहाँ।।
नाश के आप मुक्तीरमा वश किया।
मैं जजूँ भक्ति से एक ही स्वार्थ है।।6।।

ॐ ह्रीं अनंतानुबंधि-मायाकर्मविमुक्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ मिथ्यात्व संगी रूलावे सदा।
आत्मघाती किया नाश इसका प्रभो।।

धार संतोष पाऊं निजानंद को।
मैं जजूँ भक्ति से एक ही स्वार्थ है।।7।।

ॐ ह्रीं अनंतानुबंधि-लोभकर्मविमुक्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई–

क्रोध अप्रत्याख्यानावरणी, इसे घात प्रभु ने शिव परणी।
मैं भी स्वात्म क्षमा गुण पाऊँ, सिद्ध प्रभू को मन में ध्याऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणक्रोधकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्थिसमान मान जो माना, नाश किया तुमने भवहाना।
मैं भी स्वाभिमान प्रगटाऊँ, सिद्ध प्रभू को मन में ध्याऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमानकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेष सींग सम दूजी माया, नष्ट किया शिवपद को पाया।
मन वच तन को सरल बनाऊँ, सिद्ध प्रभू को मन में ध्याऊँ।।10।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमायाकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ कषाय अप्रत्याख्यानी, अणुव्रत की भी करती हानी।
मैं भी स्वात्मसुधारस पाऊँ, सिद्ध प्रभू को मन में ध्याऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणलोभकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यानावरण क्रोध के, उदय हुए संयम नहिं प्रगटे।
अणुव्रत की शक्ती प्रगटाऊँ, सिद्धप्रभू को मन में ध्याऊँ।।12।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणक्रोधकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान कषाय तीसरी मानी, महाव्रतों की करती हानी।।
देशव्रती बन कर्म नशाऊं, सिद्ध प्रभू को मन में ध्याऊँ।।13।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमानकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया प्रत्याख्यानावरणी, इसको नाशा प्रभु शिवपरणी।
इसके रहे देशव्रत पाऊँ, सिद्ध प्रभू को मन में ध्याऊँ।।14।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमायाकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ कषाय तीसरी मानी, मुनि के नहीं कहे जिनवानी।
इसको नाश स्वात्मनिधि पाऊं, सिद्ध प्रभू को मन में ध्याऊँ।।15।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणलोभकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है संज्वलन क्रोध इस जग में, जलरेखा सम रहता मुनि में।
इसे नाश संयम निधि पाऊं, सिद्ध प्रभू को मन में ध्याऊँ।।16।।

ॐ ह्रीं संज्वलनक्रोधकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौथी मानकषाय बखानी, महाव्रती बन सकते प्राणी।
इसको नष्ट किया गुण गाऊँ, सिद्ध प्रभू को मन में ध्याऊँ।।17।।

ॐ ह्रीं संज्वलनमानकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया संज्वलनी मुनि में भी, यथाख्यात नहिं होने देती।
तुमने नाश किया गुण गाऊँ, सिद्धप्रभू को मन में ध्याऊँ।।18।।

ॐ ह्रीं संज्वलनमायाकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ कषाय चतुर्थी मुनि के, तीव्र रहे विकथादिक प्रगटें।
इससे रहित आप गुण गाऊं, सिद्धप्रभू को मन में ध्याऊँ।।19।।

ॐ ह्रीं संज्वलनलोभकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नो कषाय है हास्य नाम की, इसके उदय हंसी है आती।
इससे रहित सिद्धगुण गाऊँ, सिद्धप्रभू को मन में ध्याऊँ।।20।।

ॐ ह्रीं हास्यकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनक कामिनी गेहादी में, रती उदय से प्रीती इनमें।
धर्म प्रीति हेतू गुण गाऊँ, सिद्धप्रभू को मन में ध्याऊँ।।21।।

ॐ ह्रीं रतिकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तु अनिष्ट देख अरती हो, दूर करें मुनि निज में रत हो।।
इससे रहित सिद्धगुण गाऊँ, सिद्धप्रभू को मन में ध्याऊँ।।22।।

ॐ ह्रीं अरतिकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इष्ट वियोग अनिष्ट योग से, शोक प्रगट होता सब जन के।
इसके नाश हेतु गुण गाऊँ, सिद्धप्रभू को मन में ध्याऊँ।।23।।

ॐ ह्रीं शोकशंकानिवारकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में हो अनिष्ट से भीती, भय के उदय दुःख यह रीती।
इससे रहित आप गुण गाऊँ, सिद्धप्रभू को मन में ध्याऊँ।।24।।

ॐ ह्रीं भयभंजकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निंद्य वस्तु से होती ग्लानी, उदय जुगुप्सा से यह मानी।
इसके नाश हेतु गुण गाऊँ, सिद्धप्रभू को मन में ध्याऊँ।।25।।

ॐ ह्रीं जुगुप्साचिकित्सकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्त्रीवेद उदय होने से, नारी नर से प्रीती वर्ते।
इसे नाश निज समरस पाऊँ, सिद्धप्रभू को शीश नमाऊँ।।26।।

ॐ ह्रीं स्त्रीवेदविध्वंसकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुंवेदी स्त्री की इच्छा, करता वेद उदय से स्वेच्छा।
परमब्रह्म पदवी को पाऊँ, सिद्धप्रभू को मन में ध्याऊँ।।27।।

ॐ ह्रीं पुंवेदनिवारकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर नारी दोनों की इच्छा, वेद नपुंसक उदय अपेक्षा।
वेदनाश निज में रम जाऊँ। सिद्धप्रभू को अर्घ्य चढ़ाऊँ।।28।।

ॐ ह्रीं नपुंसकवेदनिर्नाशकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-स्रग्विणी छंद–

मोहनीकर्म को नाश के सिद्ध हो, दोष से शून्य हो वीतरागी तुम्हीं।
नाथ! मेरे सभी दोष को नाशिये, मैं जजूँ भक्ति से एक ही स्वार्थ है।।29।।

ॐ ह्रीं प्रबलमहामोहकर्म विमुक्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वा

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा–

लोकशिखर पर राजते, शुद्ध सिद्ध भगवान।
सुमन चढ़ाकर पूजते, मिले निजातम धाम।।1।।

अथ पंचमवलये (दले) पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(आयुकर्मनाशक सिद्धपरमेष्ठी के 4 अर्घ्य)

–रोला छंद–

नरकों में जा जीव, तेंतिस सागर तक भी।
भोगे दुःख अतीव, गणधर कह न सकें भी।।
नरकायू को नाश, सिद्ध बने शिव स्वामी।
इसका करूँ विनाश, नमूँ सिद्ध अनुगामी।।1।।

ॐ ह्रीं नरकायुःकर्मनिवारकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन पल्य उत्कृष्ट, तिर्यंचायु कही है।
श्वांस के अठरह भाग, आयु जघन्य रही है।।
दुःख असंख्य प्रकार, तिर्यग्गति में पाये।
लीजे नाथ! उबार, नमूँ सिद्ध शिर नाये।।2।।

ॐ ह्रीं तिर्यगायुःकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन पल्य उत्कृष्ट, भोगभूमि में मानी।
मनुष आयु नर इष्ट, मध्यम बहुविध मानी।।
श्वांस के अठरह भाग, आयु जघन्य मनुज की।
नाश किया प्रभु आप, नमूँ सिद्ध पद नित ही।।3।।

ॐ ह्रीं मनुष्यायुःकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव आयु उत्कृष्ट, तेंतिस सागर मानी।
जघन आयु दस सहस, वर्ष कहे जिनवानी।।

इसको नाश जिनेन्द्र, आप सिद्धपद पाया।
नमते इन्द्र नरेन्द्र, मैं भी शरणे आया।।4।।

ॐ ह्रीं देवायुःकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

अवगाहन गुण पाय, निरुपम सुख के भोगी।
निरवधिसुस्थित मान, सिद्धिवधूपति योगी।।
ऐसे सिद्ध महान, नितप्रति भक्ति बढ़ाऊँ।
मिले निजातम ज्ञान, वसुविध अर्घ्य चढ़ाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं आयुःकर्मविमुक्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–सोरठा–

नामकर्म से दूर, अशरीरी सिद्धात्मा।
पुष्पांजलि से पूज, ज्ञानशरीरी मैं बनूँ।।1।।

अथ षष्ठवलये (दले) मंडलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।

(नामकर्म नाशक सिद्धपरमेष्ठी के 93 अर्घ्य)

–चामर छंद–

घोर दुःख दायिनी नरक गती प्रसिद्ध है।
पाप से मिले इसे विनाश आप सिद्ध हैं।।
आधि व्याधि नाशिये चतुर्गती निवारिये।
मोक्षधाम दीजिए भवाब्धि से उबारिये।।1।।

ॐ ह्रीं नरकगतिनिवारकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूख प्यास छेदनादि भेदनादि कष्ट हैं।
एक इन्द्रि से पंचेन्द्रि प्राणि सर्व भीत हैं।।
आधि व्याधि नाशिये चतुर्गती निवारिये।
मोक्षधाम दीजिए भवाब्धि से उबारिये।।2।।

ॐ ह्रीं तिर्यग्गतिछेदकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग मोक्ष का उपाय नरगती में शक्य है।
तीन रत्न पाय के मनुष्यगती धन्य है।।

आधि व्याधि नाशिये चतुर्गती निवारिये।
मोक्षधाम दीजिए भवाब्धि से उबारिये।।3।।

ॐ ह्रीं मनुष्यगतिनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ ऋद्धियों समेत देवयोनि श्रेष्ठ है।
किंतु एक इन्द्रि हो सकें अतः अनिष्ट है।।
आधि व्याधि नाशिये चतुर्गती निवारिये।
मोक्षधाम दीजिए भवाब्धि से उबारिये।।4।।

ॐ ह्रीं देवगतिनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक इन्द्रि भूमि अग्नि, वायु जल वनस्पती।
जन्म धार धार के अनंत जीव हैं दुखी।।
जाति कर्म शून्य आप सिद्ध धाम में बसें।
कर्मशून्य धाम दो हमें इसीलिए जजें।।5।।

ॐ ह्रीं एकेन्द्रियजातिरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंख जोंक केंचुआ द्विइन्द्रियों को धारते।
कष्ट भोगते अनंत सुख कभी न पावते।।
जाति कर्म शून्य आप सिद्ध धाम में बसें।
कर्मशून्य धाम दो हमें इसीलिए जजें।।6।।

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियजातिकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चींटि मत्कुणादि तीन इंद्रियों को पायके।
जन्म मृत्यु धारते कुयोनि पाय पायके।।
जाति कर्म शून्य आप सिद्ध धाम में बसें।
कर्मशून्य धाम दो हमें इसीलिए जजें।।7।।

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियजातिकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मक्खि मच्छरादि चार इन्द्रि जीव जन्मते।
बार बार जन्म मृत्यु दुख असंख्य भोगते।।
जाति कर्म शून्य आप सिद्ध धाम में बसें।
कर्मशून्य धाम दो हमें इसीलिए जजें।।8।।

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियजातिकर्मरहितायश्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

पाँच इन्द्रियों समेत नारकी तिर्यंच भी।
देव मनुज हों उन्हीं में क्रूर हिंस्र जंतु भी।।
जाति कर्म शून्य आप सिद्ध धाम में बसें।
कर्मशून्य धाम दो हमें इसीलिए जजें।।9।।

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियजातिकर्मरहितायश्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

औदारिक तनु धारते, नर तिर्यंच सदैव।
इसे नाश शिवपद लिया, जजूँ भक्तिवश एव।।10।।

ॐ ह्रीं औदारिकनामकर्मरहितायश्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव नारकी वैक्रियक, देह धरें जग मध्य।
इसे नाश अशरीर हो, नमत मिले सुख सद्य।।11।।

ॐ ह्रीं वैक्रियकनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि आहारक ऋद्धि युत, संशय दूर करंत।
इसे नाश सिद्धातमा, नमत करूँ भव अंत।।12।।

ॐ ह्रीं आहारकनामकर्मविनाशनायश्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तैजस कर्मोदय सहित, सब संसारी जीव।
इसे नाश अशरीर हो, नमते सौख्य अतीव।।13।।

ॐ ह्रीं तैजसकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्मणकर्म उदय सहित, जग में जीव भ्रमंत।
कर्मपिंड को नाश कर, भये सिद्ध भगवंत।।14।।

ॐ ह्रीं कार्मणशरीरकर्मछेदकायश्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औदारिक परमाणु से, तनु का बंधन मान्य।
इसे नाश शिव पद बसे, नमत मिले सुख साम्य।।15।।

ॐ ह्रीं औदारिकबंधनकर्मरहितायश्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विक्रियतनुबंधन निमित, सुघटित तनु बन जाय।
कर्मनाश सिद्धातमा, जजूँ चरण सुखदाय।।16।।

ॐ ह्रीं वैक्रियकबंधनकर्मरहितायश्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहारकबंधन निमित, छिद्ररहित तनु होय।
इसे नाश शिव पद लिया, नमत तुम्हें सुख होय।।17।।

ॐ ह्रीं आहारकबंधनकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तैजसबंधन के निमित, तनु में दीप्ति लसंत।
देह शून्य प्रभु सिद्ध हो, नमूँ नित्य पदकंज।।18।।

ॐ ह्रीं तैजसबंधनकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्माण बंधन उदय, पुद्गल आत्म प्रदेश।
एकमेक होकर रहें, इनसे रहित जिनेश।।19।।

ॐ ह्रीं कार्मणबंधनशातकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औदारिक अणु साथ में आत्मा एकीरूप।
नाश किया तुमने अतः, नमूँ नमूँ चिद्रूप।।20।।

ॐ ह्रीं औदारिकसंघातकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैक्रिय परमाणू मिले, आत्म प्रदेशहिं संग।
नाश किया संघात यह, नमते बनूँ असंग।।21।।

ॐ ह्रीं वैक्रियकसंघातकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहारक संघात से, रहित सिद्ध भगवान्।
नमूँ नमूँ सब सिद्ध को, मिले भेद विज्ञान।।22।।

ॐ ह्रीं आहारकसंघातकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तैजस जो वर्गणा मिलीं, आत्मप्रदेशहिं संग।
इन्हें नाश मुक्ती लिया, जजते बनूँ निसंग।।23।।

ॐ ह्रीं तैजससंघातकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्माण संघात से, रहित निरंजन देव।
नमूँ सिद्ध परमातमा, करूँ अमंगल छेव।।24।।

ॐ ह्रीं कार्मणसंघातकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पद्धड़ी छंद –

संस्थान प्रथम दशताल मान, समचतूरस्र सुंदर महान।
इस हान हुये प्रभु सिद्ध शुद्ध, पूजत होवे आत्मा विशुद्ध।।25।।

ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थानरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस कर्म उदय आकार जान, वट वृक्ष सदृश ऊपर महान्।
इस हान हुये प्रभु सिद्ध शुद्ध, पूजत होवे आत्मा विशुद्ध।।26।।

ॐ ह्रीं न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थानरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

वामी सम तन आकार जान, ऊपर कृश नीचे वृहत् मान।
इस हान हुये प्रभु सिद्ध शुद्ध, पूजत होवे आत्मा विशुद्ध।।27।।

ॐ ह्रीं बाल्मीक[1]संस्थानरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस कर्म उदय कुब्जक शरीर, इससे विरूप जन हों अधीर।
इस हान हुये प्रभु सिद्ध शुद्ध, पूजत होवे आत्मा विशुद्ध।।28।।

ॐ ह्रीं कुब्जकसंस्थानरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिससे बामन आकार होय, यह देह अपावन अथिर होय।
इस हान हुये प्रभु सिद्ध शुद्ध, पूजत होवे आत्मा विशुद्ध।।29।।

ॐ ह्रीं वामनसंस्थानरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस उदय देह बेडौल मान, विषमाकृति हुंडक नाम जान।
इस हान हुये प्रभु सिद्ध शुद्ध, पूजत होवे आत्मा विशुद्ध।।30।।

ॐ ह्रीं हुंडकसंस्थानरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिससे सब अंग उपांग होत, औदारिक अंगोपांग स्रोत।
इस हान हुये प्रभु सिद्ध शुद्ध, पूजत होवे आत्मा विशुद्ध।।31।।

ॐ ह्रीं औदारिकशरीरांगोपांगविनाशकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैक्रियक सु आंगोपांग नाम, इससे सुर तनु नयनाभिराम।
इस हान हुये प्रभु सिद्ध शुद्ध, पूजत होवे आत्मा विशुद्ध।।32।।

ॐ ह्रीं वैक्रियकशरीरांगोपांगरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहारकआंगोपांग कर्म, पुतला बनता सुंदर सुशर्म।
इस हान हुये प्रभु सिद्ध शुद्ध, पूजत होवे आत्मा विशुद्ध।।33।।

ॐ ह्रीं आहारकशरीरांगोपांगरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. स्वाति संस्थान भी नाम है।

जिससे नस बंधन कील अस्थि, हो वज्रसदृश अतिशायि शक्ति।
इस हान हुये प्रभु सिद्ध शुद्ध, पूजत होवे आत्मा विशुद्ध।।34।।
ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहननहिंसकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिससे हों वज्र समान अस्थि, हों कील वज्र की अतुल शक्ति।
इस हान हुये प्रभु सिद्ध शुद्ध, पूजत होवे आत्मा विशुद्ध।।35।।
ॐ ह्रीं वज्रनाराचसंहननरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिससे कीलें सामान्य जान, हों अस्थि वज्रसम शक्तिमान।
इस हान हुये प्रभु सिद्ध शुद्ध, पूजत होवे आत्मा विशुद्ध।।36।।
ॐ ह्रीं नाराचसंहननशातकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्थी में कीलें तरफ एक, संहनन अर्धनाराच देख।
इस हान हुये प्रभु सिद्ध शुद्ध, पूजत होवे आत्मा विशुद्ध।।37।।
ॐ ह्रीं अर्धनाराचसंहननशातकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस कर्म उदय से सर्व अस्थि, आपस में कीलित हों स्वशक्ति।
इस हान हुये प्रभु सिद्ध शुद्ध, पूजत होवे आत्मा विशुद्ध।।38।।
ॐ ह्रीं कीलसंहननरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नस से बंधी हों अस्थि संधि, नहिं आपस में कीलित विसंधि।
इस हान हुये प्रभु सिद्ध शुद्ध, पूजत होवे आत्मा विशुद्ध।।39।।
ॐ ह्रीं असंप्राप्तसृपाटिकासंहननरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वा

जिस कर्म उदय तनु धरे वर्ण, यह श्वेत शस्त या अशुभ वर्ण।।
इस पुद्गल गुण से हीन सिद्ध, मैं जजत बनूँ निजगुण समृद्ध।।40।।
ॐ ह्रीं श्वेतनामकर्मकृंतकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस कर्म उदय से पीत गात्र, शुभ अशुभ धरें सब जीव मात्र।
इस पुद्गल गुण से मुक्त सिद्ध, मैं जजत बनूं निजगुण समृद्ध।।41।।
ॐ ह्रीं पीतनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगजीव देह में हरित वर्ण, शुभ अशुभ कर्म से विविध वर्ण।
इस पुद्गल गुण से हीन सिद्ध, मैं जजत बनूँ निजगुण समृद्ध।।42।।
ॐ ह्रीं हरितनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोदय वश तनु धरे कृष्ण, शुभ अशुभ विविध देहादि वर्ण।
इस पुद्गल गुण से हीन सिद्ध, मैं जजत बनूँ निजगुण समृद्ध।।43।।
ॐ ह्रीं कृष्णनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोदय वश से लाल देह, सब जीव धरें शुभ में सनेह।
इस पुद्गल गुण से हीन सिद्ध, मैं जजत बनूँ निजगुण समृद्ध।।44।।
ॐ ह्रीं रक्तनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब प्राणी को प्रिय है सुगंध, ये कर्म करें सब जगत अंध।
इस पुद्गल गुण से हीन सिद्ध, मैं जजत बनूँ निजगुण समृद्ध।।45।।
ॐ ह्रीं सुगंधनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस कर्म उदय दुर्गंध गात्र, प्राणी हो जाते दुःखपात्र।
इस पुद्गल गुण से हीन सिद्ध, मैं जजत बनूँ निजगुण समृद्ध।।46।।
ॐ ह्रीं दुर्गंधनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो धरें तिक्तरससहित देह, कर्मोदयवश से विविध एह।
इस पुद्गल गुण से हीन सिद्ध, मैं जजत बनूँ निजगुण समृद्ध।।47।।
ॐ ह्रीं तिक्तरसनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कटुक वनस्पति आदि गात्र, कर्मोदय से भी हों सुगात्र।
इस पुद्गल गुण से हीन सिद्ध, मैं जजत बनूँ निजगुण समृद्ध।।48।।
ॐ ह्रीं कटुकरसनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाते कषायला रस समेत, कर्मोदय से हों विविध भेद।
इस पुद्गल गुण से हीन सिद्ध, मैं जजत बनूँ निजगुण समृद्ध।।49।।
ॐ ह्रीं कषायरसकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तनु अम्ल मिले कर्मन वशात्, एकेन्द्रिय आदिक विविध जात।
इस पुद्गल गुण से हीन सिद्ध, मैं जजत बनूँ निजगुण समृद्ध।।50।।
ॐ ह्रीं आम्लरसकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मधुर देह को पाय जीव, तनु धर धर मरते दुख अतीव।
इस पुद्गल गुण से हीन सिद्ध, मैं जजत बनूँ निजगुण समृद्ध।।51।।
ॐ ह्रीं मधुररसकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तनु मृदु स्पर्श यह कर्म कार्य, निज तत्त्व ज्ञान बिन कष्ट धार्य।
इस पुद्गल गुण से हीन सिद्ध, मैं जजत बनूँ निजगुण समृद्ध।।52।।
ॐ ह्रीं मृदुत्वस्पर्शकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्कश स्पर्श तनु धरत जीव, संसार भ्रमण दुष्कर अतीव।
इस पुद्गल गुण से हीन सिद्ध, मैं जजत बनूँ निजगुण समृद्ध।।53।।
ॐ ह्रीं कर्कश स्पर्शकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु तनु भी कर्मोदय निमित्त, त्रस थावर योनी धरत नित्त।
इस पुद्गल गुण से हीन सिद्ध, मैं जजत बनूँ निजगुण समृद्ध।।54।।
ॐ ह्रीं गुरुस्पर्शकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लघु तनु धर धर प्राणी भ्रमंत, निज आत्म ज्ञान बिन नाहिं अंत।
इस पुद्गल गुण से हीन सिद्ध, मैं जजत बनूँ निजगुण समृद्ध।।55।।
ॐ ह्रीं लघुस्पर्शकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल आदि जीव के शीत देह, नहिं कर्म नाश बिन हों विदेह।
इस पुद्गल गुण से हीन सिद्ध, मैं जजत बनूँ निजगुण समृद्ध।।56।।
ॐ ह्रीं शीतस्पर्शकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी आदिक के देह उष्ण, निश्चयनय से मैं शुद्ध जिष्णु।
इस पुद्गल गुण से हीन सिद्ध, मैं जजत बनूँ निजगुण समृद्ध।।57।।
ॐ ह्रीं उष्णस्पर्शकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिकना तनु कर्मोदय निमित्त, आत्मा स्वभाव से शुद्ध नित्त।
इस पुद्गल गुण से हीन सिद्ध, मैं जजत बनूँ निजगुण समृद्ध।।58।।
ॐ ह्रीं स्निग्धस्पर्शनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूखा तनु धर धर मरें जीव, स्पर्श रहित आत्मा शुचीव।
इस पुद्गल गुण से हीन सिद्ध, मैं जजत बनूँ निजगुण समृद्ध।।59।।
ॐ ह्रीं रूक्षस्पर्शकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–गीता छंद–

पर्याप्त पंचेन्द्रिय मनुज या पशू पाप क्रिया करें।
नरकायु बांधें यहाँ से मरकर नरक में भव धरें।।
विग्रहगती में पूर्व का आकार यह अनुपूर्वी।
उनको नमूँ जिनसे हना यह नरकगति अनुपूर्वी।।60।।
ॐ ह्रीं नरकगत्यानुपूर्वि दाहकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गती के जीव यदि तिर्यग्गती जाने लगें।
तनु पूर्व का आकार तिर्यग् आनुपूर्वी का उदै।।
गति आयु विरहित शुद्ध परमानंदमय शुद्धातमा।
उन सिद्ध को पूजूँ सदा हो जाऊँ मैं सिद्धातमा।।61।।
ॐ ह्रीं तिर्यग्गत्यानुपूर्वि दाहकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गती के जीव भी नर जन्म धर सकते यहाँ।
विग्रहगती में आनुपूर्वी का उदय श्रुत में कहा।।
गति आनुपूर्वी रहित परमानंदमय शुद्धातमा।
उन सिद्ध को पूजूँ सदा हो जाऊँ मैं सिद्धातमा।।62।।
ॐ ह्रीं मनुष्यगत्यानुपूर्वि दाहकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवत्प पाने हेतु नर पशु आनुपूर्वी उदय से।
जो पूर्व तनु आकार धरते आपने नाशा उसे।।
देवानुपूर्वी रहित चिन्मय ज्योति मुझ शुद्धातमा।
उन सिद्ध को पूजूँ सदा हो जाऊँ मैं सिद्धातमा।।63।।
ॐ ह्रीं देवगत्यानुपूर्वि दाहकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं अति गुरु नहिं अति लघू तनु धरें संसारी सभी।
इस अगुरुलघु को नष्ट कर के पा लिया पंचम गती।।
मैं नित्य परमानंद चिन्मय ज्योति धर शुद्धात्मा।
उन सिद्ध को पूजूँ सदा हो जाऊँ मैं सिद्धातमा।।64।।
ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वकर्मध्वंसकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज के हि अंगोपांग निज का घात कर देते जभी।
उपघात कर्मोदय निमित इस घात शिव पहुँचे तभी।।

मैं शुद्धनय से ज्ञानदर्शन पूर्ण हूँ शुद्धातमा।
उन सिद्ध को पूजूँ सदा हो जाऊँ मैं सिद्धातमा।।65।।
ॐ ह्रीं उपघातनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सींग दाढ़ादिक धरें गौ व्याघ्र सर्पादिक यहाँ।
परघात कर्मोदय निमित इस घात शिवपद ले यहाँ।।
मैं शुद्धनय से कर्म अंजन से रहित शुद्धातमा।
उन सिद्ध को पूजूँ सदा हो जाऊँ मैं सिद्धातमा।।66।।
ॐ ह्रीं परघातनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रवि के विमानहिं चमकते वे भूमिकायिक से बनें।
भूजीव आतपकर्मधारी जन्मते इनमें घने।।
सब शुद्धनय से शुद्ध भी निजकर्म हन शुद्धातमा।
उन सिद्ध को पूजूँ सदा हो जाऊँ मैं सिद्धातमा।।67।।
ॐ ह्रीं आतपनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शशि तारकादि विमान में तनुधार पृथ्वी चमकते।
खद्योत भी उद्योत कर्मोदय धरें मिथ्यात्व से।।
प्रभु कर्म नाशा मुक्ति लक्ष्मी पति बने शुद्धातमा।
उन सिद्ध को पूजूँ सदा हो जाऊँ मैं सिद्धातमा।।68।।
ॐ ह्रीं उद्योतनामकर्मदाहकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब प्राणधारी जी रहे उच्छ्वास अरु निश्वास से।
यह नामकर्म विनाश कर लोकाग्र पे जो जा बसे।।
उन सिद्धसम मेरी सदा है शुद्ध बुद्ध चिदातमा।
उन सिद्ध को पूजूँ सदा हो जाऊँ मैं सिद्धातमा।।69।।
ॐ ह्रीं उच्छ्वासनिःश्वासनिर्वासकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुंदर गमन हो जीव का शुभ कर विहायोगति उदय।
इस कर्म विरहित सिद्ध प्रभु हैं नित करूँ उनकी विनय।।
समरस सुधास्वादी मुनी ध्याते सदा निज आत्मा।
उन सिद्ध को पूजूँ सदा हो जाऊँ मैं सिद्धातमा।।70।।
ॐ ह्रीं प्रशस्तविहायोगतिनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिससे असुंदर हो गमन वह अप्रशस्त विहायगति ।
इन कर्ममल विरहित विशुद्धात्मा लहें हैं सिद्धगति।।
मैं नित्य परमाल्हाद ज्ञायक चित् चिदानंदात्मा।
उन सिद्ध को पूजूँ सदा हो जाऊँ मैं सिद्धातमा।।71।।
ॐ ह्रीं अप्रशस्तविहायोगतिनिर्वासकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो इन्द्रि से पंचेन्द्रि तक त्रस नाम कर्मोदय धरें।
दुर्लभ इसे भी प्राप्त कर ही भव्य रत्नत्रय धरें।।
त्रस रहित सिद्धों को नमूँ मैं बनूँ अंतर आतमा।
उन सिद्ध को पूजूँ सदा हो जाऊँ मैं सिद्धातमा।।72।।
ॐ ह्रीं त्रसकायरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भू जल अगनि वायू वनस्पति पाँच स्थावर कहे।
इनके दयालू मुनी ही इस कर्म के घातक रहें।।
निज पर दया कर मैं स्वयं बन जाऊँ शुद्ध चिदात्मा।
उन सिद्ध को पूजूँ सदा हो जाऊँ मैं सिद्धातमा।।73।।
ॐ ह्रीं स्थावरनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बादर उदय से जीव पर से मरें पर को घातते।
त्रस थावरों में जन्मते मरते सदा दुख पावते।।
इस कर्म घातन हेतु महव्रत धर बनूं शुद्धातमा।
उन सिद्ध को पूजूँ सदा हो जाऊँ मैं सिद्धातमा।।74।।
ॐ ह्रीं बादरनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सूक्ष्म कर्मोदय धरें नहिं पर निमित्त से मर सकें।
नहिं हो किसी का घात इनसे नहिं किसी को ये दिखें।।
इन थावरों से शून्य मैं ध्याऊँ सदा शुद्धातमा।
उन सिद्ध को पूजूँ सदा हो जाऊँ मैं सिद्धातमा।।75।।
ॐ ह्रीं सूक्ष्मकर्मशोषकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्याप्ति अपनी पूर्ण कर प्राणी तनू धरते यहाँ।
इस कर्म विरहित ज्ञानघन चैतन्य चिंतामणि कहा।।

मैं शुद्धनय से चिंतवन कर ध्याऊँ निज शुद्धातमा।
उन सिद्ध को पूजूँ सदा हो जाऊँ मैं सिद्धातमा।।76।।

ॐ ह्रीं पर्याप्तिकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउपंच छह पर्याप्तियाँ भी पूर्ण जिनकी हों नहीं।
इस अपर्याप्ती के उदय से क्षुद्र भव धरते सही।।
इस कर्म विरहित ज्ञानज्योती पुंज मुझ शुद्धातमा।
उन सिद्ध को पूजूँ सदा हो जाऊँ मैं सिद्धातमा।।77।।

ॐ ह्रीं अपर्याप्तिनामकर्मनिषूदकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस वनस्पति का एक जीवहि स्वामि हो प्रत्येक वो।
यह वनस्पति का भेद है इस नाश कर शिव गये जो।।
एकत्व जिनका प्राप्त हो इस हेतु ध्याऊं स्वात्मा।
उन सिद्ध को पूजूँ सदा हो जाऊँ मैं सिद्धातमा।।78।।

ॐ ह्रीं प्रत्येकशरीरहिंसकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो तनु अनंतानंत जीवों का बने बस एक हो।
शैवाल आदि अनंतकायिक नाम साधारण रहो।।
प्रभु नित्य इतर निगोद पर्यय ना लहूं यह प्रार्थना।
उन सिद्ध को पूजूँ सदा हो जाऊँ मैं सिद्धातमा।।79।।

ॐ ह्रीं साधारणशरीरनिर्वासकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शेर छंद –

रस आदि सात धातुयें स्थिर बनी रहें।
उपवास आदि से भी देह क्षीण ना बने।।
इस नाम कर्म से विहीन सिद्धपती हो।
मैं पूजहूँ तुम्हें अपूर्व विभामणी हो।।80।।

ॐ ह्रीं स्थिरनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रस आदि धातुएं सदा अस्थिर बनी रहें।
उपवास आदि से सदा आकुल तनू रहे।।
इस नाम कर्म से विहीन सिद्धपती हो।
मैं पूजहूँ तुम्हें अपूर्व विभामणी हो।।81।।

ॐ ह्रीं अस्थिरनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिर मुख व नासिकादि श्रेष्ठ आकृती कहीं।
शुभनाम कर्म के उदय से पावते सही।।
इस नाम कर्म से विहीन सिद्धपती हो।
मैं पूजहूँ तुम्हें अपूर्व विभामणी हो।।82।।

ॐ ह्रीं शुभनामकर्मनाशकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिर मुख व पैर आदि भी आकार अशुभ हों।
इस नाम के उदय से हीन देह प्राणि हों।।
इस नाम कर्म से विहीन सिद्धपती हो।
मैं पूजहूँ तुम्हें अपूर्व विभामणी हो।।83।।

ॐ ह्रीं अशुभनामकर्मनिर्वासकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिससे सभी जन अपने में प्रीति को करें।
इसको कहें सुभग तनु शुभ कर्म से धरें।।
इस नाम कर्म से विहीन सिद्धपती हो।
मैं पूजहूँ तुम्हें अपूर्व विभामणी हो।।84।।

ॐ ह्रीं सुभगनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिससे करें अप्रीती दुर्भग उसे कहें।
इसके उदय से प्राणी अति दीन ही रहें।।
इस नाम कर्म से विहीन सिद्धपती हो।
मैं पूजहूँ तुम्हें अपूर्व विभामणी हो।।85।।

ॐ ह्रीं दुर्भगनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुस्वर हो कोकिला सम सबको मधुर लगे।
सुनते न तृप्ति होवे इस कर्म का उदै।।
इस नाम कर्म से विहीन सिद्धपती हो।
मैं पूजहूँ तुम्हें अपूर्व विभामणी हो।।86।।

ॐ ह्रीं सुस्वरनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुःस्वर हो सबको अप्रिय भाषा कठोर हो।
सुनना न कोई चाहे नीरस वचन अहो।।

इस नाम कर्म से विहीन सिद्धपती हो।
मैं पूजहूँ तुम्हें अपूर्व विभामणी हो।।87।।

ॐ ह्रीं दुःस्वरनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसके उदय से तनु में कांती अपूर्व हो।
आदेय उसको कहिये मन नेत्र प्रेय हो।।
इस नाम कर्म से विहीन सिद्धपती हो।
मैं पूजहूँ तुम्हें अपूर्व विभामणी हो।।88।।

ॐ ह्रीं आदेयप्रकृतिविध्वंसकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिससे शरीर रूखा नहिं कांति को धरे।
ये कर्म अशोभन व अनादेय दुख करे।।
इस नाम कर्म से विहीन सिद्धपती हो।
मैं पूजहूँ तुम्हें अपूर्व विभामणी हो।।89।।

ॐ ह्रीं अनादेयप्रकृतिविध्वंसकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिससे सुयश हो जग में गुण हों भी या नहों।
वह कर्म यशस्कीर्ती अतिशायि कीर्ति हो।।
इस नाम कर्म से विहीन सिद्धपती हो।
मैं पूजहूँ तुम्हें अपूर्व विभामणी हो।।90।।

ॐ ह्रीं यशस्कीर्तिनामकर्मघातकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ कार्य करें गुण हों फिर भी अकीर्ति हो।
यह नाम अयशकीर्ती मन में अशांति हो।।
इस नाम कर्म से विहीन सिद्धपती हो।
मैं पूजहूँ तुम्हें अपूर्व विभामणी हो।।91।।

ॐ ह्रीं अयशस्कीर्तिनामकर्मघातकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

सुंदर व असुंदर शरीर की करे रचना।
निर्माण कर्म ही तो विधाता यहाँ बना।।
इस नाम कर्म से विहीन सिद्धपती हो।
मैं पूजहूँ तुम्हें अपूर्व विभामणी हो।।92।।

ॐ ह्रीं निर्माणनामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश प्रकृति पुण्यराशि सर्वश्रेष्ठ है।
इसके उदय से धर्मतीर्थ की प्रवृत्ति है।।
फिर भी ये कर्म बंधन जग में ही रोकता।
प्रभु सिद्ध को जजूँ मैं मेटो जगत व्यथा।।93।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकचतुस्त्रिंशदतिशय-अष्टप्रातिहार्य-समवसरणादि-विभूतियुक्त-आर्हंत्य-लक्ष्मीहेतु तीर्थंकरनामकर्मोज्जासकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-चामर छंद –

नाम कर्मनाश सूक्ष्म गुण समेत सिद्ध हो।
मैं नमूँ त्रिकाल नाथ, नामकर्म नष्ट हो।।
आधि व्याधि नाशिये चतुर्गती निवारिये।
मोक्षधाम दीजिये भवाब्धि से उबारिये।।94।।

ॐ ह्रीं नामकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

दोहा – **तुमपद आश्रय जो लिया, सो पहुँचे निजधाम।**
अतः सुमन अर्पण करूँ, शत शत करूँ प्रणाम।।1।।

अथ सप्तमवलये (दले) पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(गोत्रकर्म नाशक सिद्धपरमेष्ठी के 2 अर्घ्य)

–रोला छंद –

उच्च गोत्र से जीव, श्रेष्ठ कुलों में जन्में।
शिवसुख हेतु अतीव, मिलें सहज ही उनमें।।
इसे नाश कर आप, लोक शिखर पर राजें।
नमत नशे भवताप, कर्मअरी दल भाजें।।1।।

ॐ ह्रीं उच्चगोत्रकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नीच गोत्र से जंतु, हीनवंश में आते।
शिवकारण की पूर्ण, सामग्री नहिं पाते।।
इसे नाश कर आप, लोक शिखर पर राजें।
नमत नशे भवताप, कर्मअरी दल भाजें।।2।।

ॐ ह्रीं नीचगोत्रकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

जग में ऊंच व नीच, कुल में जन्म धरावे।
गोत्र कर्म भव बीच, सब जन को हि भ्रमावे।।
इसे नाश कर आप, लोक शिखर पर राजें।
नमत नशे भवताप, कर्मअरी दल भाजें।।3।।

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

दोहा – **ज्ञान चेतनारूप, सिद्धप्रभू चिद्रूप हैं।**
पुष्पांजलि से पूज, सकल दुःख दारिद हरूँ।।1।।

अथ अष्टमवलये (दले) पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(अन्तरायकर्म नाशक सिद्धपरमेष्ठी के 5 अर्घ्य)

–चौबोल छंद –

इच्छा होती दान करें हम, अंतराय ही विघ्न करे।
धन होवे पर दान नहीं कर, सकें यही हो दुःख अरे।।
इनसे रहित सिद्ध प्रभु का हम, नित प्रति वंदन करते हैं।
शिवपथ के सब विघ्न दूर हों, यही प्रार्थना करते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं दानान्तरायदाहकाय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविध लाभ चाहने पर, लाभांतराय ही विघ्न करे।
लाभ न हो इच्छानुसार तब, मन में होता खेद अरे।।
इनसे रहित सिद्ध प्रभु का हम, नित प्रति वंदन करते हैं।
शिवपथ के सब विघ्न दूर हों, यही प्रार्थना करते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं लाभान्तरायरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अशनपानमालादिक सब, भोगान्तराय से नहिं मिलते।
भविजन हृदय कमल मुकुलित हैं, ज्ञानसूर्य बिन नहिं खिलते।।
इनसे रहित सिद्ध प्रभु का हम, नित प्रति वंदन करते हैं।
शिवपथ के सब विघ्न दूर हों, यही प्रार्थना करते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं भोगान्तरायकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्त्री वस्त्र आदि सब उप-भोगांतराय से नहीं मिलें।
आत्मसुधारस आस्वादी मुनि, उनको ही निज सौख्य मिले।।

इनसे रहित सिद्ध प्रभु का हम, नित प्रति वंदन करते हैं।
शिवपथ के सब विघ्न दूर हों, यही प्रार्थना करते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं उपभोगान्तरायरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज की शक्ती प्रकट न होवे, वीर्य विघ्न का उदय कहा।
निज अनंत शक्ती मिल जावे, इसीलिए तुम शरण लिया।।
इनसे रहित सिद्ध प्रभु का हम, नित प्रति वंदन करते हैं।
शिवपथ के सब विघ्न दूर हों, यही प्रार्थना करते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं वीर्यांतरायकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

अंतराय का उदय हुए से, विघ्न पड़े सब कार्यों में।
अतुलशक्ति युत आत्मा भी तो, हीन बना है भव-भव में।।
इनसे रहित सिद्ध प्रभु का हम, नित प्रति वंदन करते हैं।
शिवपथ के सब विघ्न दूर हों, यही प्रार्थना करते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अंतरायकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-स्रग्विणी छंद –

एक सौ आठ चालीस प्रकृती कहीं।
आपने नाशके मोक्ष लक्ष्मी लिया।।
कर्म से शून्य परमात्म सुख के लिए।
मैं जजूँ आपको लब्धियाँ नौ मिलें।।1।।

ॐ ह्रीं शताष्टचत्त्वारिंशत्कर्मप्रकृतिमुक्ताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म नाशे अनंते अनंते सभी।
आप ही ज्ञान आनन्त्य सिंधू कहे।।
मैं अनंतों गुणों को स्वयं ही वरूँ।
शक्ति ऐसी मिले आपकी भक्ति से।।2।।

ॐ ह्रीं अनंतानंतकर्मरहिताय श्री सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य - ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतानंतप्रमसिद्धेभ्यो नमो नमः।

जयमाला

—शंभुछंद—

तर्ज - यह नंदनवन...........

जय जय जिनमणि, जग चूड़ामणि, तुम कर्मरहित सिद्धीपति हो।
मन वच तन से, सब सिद्धों के, चरणों में मेरी प्रणती हो।।जय.।। टेक.।।

प्रभु चार अनंतानूबंधी, त्रय दर्शन मोह विनाश किया।
क्षायिक सम्यक्त्वी मुनी बने, फिर क्षपक श्रेणि को मांड लिया।।
गुणस्थान नवम में छत्तिस प्रकृती, नाश आप मुनिगणपति हो।।जय.।।1।।

दशवें में सूक्ष्म लोभ नाशा, नर आयु बिना त्रय आयु नहीं।
बारहवें में सोलह प्रकृती, कर नाश केवली हुये यहीं।।
इन त्रेसठ प्रकृती के क्षय से, परमात्मा नव लब्धीपति हो।।जय.।।2।।

ज्ञानावरणी दर्शनावरण मोहनीय व अंतराय घाती।
पण नव अट्ठाइस पाँच कहीं, त्रय आयु नाम की तेरह ही।।
इन कर्म रहित धनपति विरचित, प्रभु समवसरण लक्ष्मीपति हो।।जय.।।3।।

गुणथान चौदवें में द्विचरम, के समय बहत्तर प्रकृति हनी।
फिर अंत समय तेरह प्रकृती, नाशा शिवतिय से प्रीति घनी।।
प्रभु गुणस्थान से रहित हुये, शिवधाम गये त्रिभुवनपति हो।।जय.।।4।।

इन इक सौ अड़तालिस प्रकृती, के भेद असंख्य अनंत कहे।
प्रभु द्रव्य भाव नोकर्म नाश, यमराज शत्रु का अंत किये।।
सुख ज्ञान दर्श वीरज आदिक, निज के अनंत गुण निधिपति हो।।जय.।।5।।

प्रभु मोह नाश क्षायिक समकित, ज्ञानावरणी हन पूर्णज्ञान।
दर्शनरज नाश पूर्ण दर्शन, हन अंतराय वीरज अमान[1]।।
हन नामकर्म सूक्ष्मत्व लिया, हन गोत्र अगुरुलघु गुणयुत हो।।जय.।।6।।

हन आयू अवगाहन गुणधृत, हन वेदनीय अव्याबाधी।
सुख लिया अनंत अतीन्द्रिय प्रभु, नाशी सब जन्म मरण व्याधी।।
प्रभु आठकर्म से रहित आठगुण सहित मोक्षनगराधिप हो।।जय.।।7।।

1. अपरिमित-अनंत।

जो भव्य आपकी भक्ति करें, द्वयविध रत्नत्रय युक्ति धरें।
निज शक्ति प्रगट कर मुक्ति वरें, गुणरत्नों का भंडार भरें।।
तुम भक्तों को निज सम करते, इससे अद्भुत पारसमणि हो।।जय.।।8।।

इस ढ़ाईद्वीप में कर्मभूमि, इक सौ सत्तर बतलाई हैं।
उनसे तीर्थंकर आदि नरों, ने मुक्तिवल्लभा पाई हैं।।
तीर्थंकर होकर शिव पाते, उन सबको मेरी शिरनति हो।।जय.।।9।।

बिन तीर्थंकर भी चक्रवर्ति, बलभद्र कामदेवादि पुरुष।
बिन पदवी के सामान्य मनुष, शिवपद पा लेते कर्मवियुत।।
उपसर्ग बिना उपसर्ग सहित, अगणित नरपुंगव शिवपति हों।।जय.।।10।।

जल से थल से नभ से भी तो, शिव गये अनंतानंत मनुज।
सुर या खेचर उपसर्ग किया, जल या नभ में छोड़ा दुखप्रद।।
धर शुक्लध्यान तत्क्षण कर्मों, को नाश अंतकृत केवलि हों।।जय.।।11।।

जो द्रव्यपुरुष वेदी भावों, से हुये नपुंसक वेदी भी।
या भावों से स्त्रीवेदी, मुक्ती पा जाते हैं ये भी।।
ये भाव भेद त्रयविध मुनिगण, शिव गये उन्हें नित शिरनति हो।।जय.।।12।।

जो सिद्ध हुये हैं, होते हैं, होवेंगे ये त्रय कालों के।
इनको शत शत वंदन मेरा, ये मेरे अघ को नाशेंगे।।
कैवल्य 'ज्ञानमति' हेतु आज, सिद्धों को नमते शिवगति हो।।जय.।।13।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मविनिर्मुक्तअनंतानंतसिद्धपरमेष्ठिभ्यः जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेरछंद—

जो भव्य कर्मदहन का विधान करेंगे।
वे भाव कर्म द्रव्यकर्म दहन करेंगे।।
निज का परम अतीन्द्रिय सुख प्राप्त करेंगे।
रवि 'ज्ञानमती' से यहाँ प्रकाश भरेंगे।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

सिद्धों के आठ गुणों की पूजा

–अथ स्थापना (तर्ज-तुमसे लागी लगन......) –

नाथ! त्रिभुवनपती, पाई पंचमगती, इन्द्र आये।
भक्ति से आपको शिर झुकायें।।
आठ कर्मों को तुमने विनाशा, आठ गुण को स्वयं में प्रकाशा।
मारा यमराज को, पाया शिवराज्य को, भव मिटाये।
इन्द्र सब मिलके उत्सव मनायें।।नाथ.।।
आपमें गुण अनंतों भरे हैं, आप मुक्तीरमा को वरें हैं।
आप वंदन करें, पापखंडन करें, सौख्य पायें।।
दुःख संकट तुरत ही भगायें।।नाथ.।।
आप आह्वान करते विधी से, पूजते पाद पंकज रुची से।
अष्टमी भूमि पे, आप जाके बसे, कीर्ति गायें।।
कर्म बंधन कटें मुक्ति पायें।।नाथ.।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धाधिपते! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धाधिपते! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धाधिपते! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(तर्ज-ऐ माँ तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी..)

सिद्धों की शरण में आये हैं, तन मन धन अर्पण कर देंगे।
भगवान-भगवान तेरी भक्ती के लिए, जीवन भी समर्पण कर देंगे-2।।टेक.।।

तिहुँजग का नीर पिया,नहिं प्यास बुझा पाये।
तुम पद धारा देने, सुरगंगा जल लाये।।
निज आत्मा की शांति के लिए, जलधार समर्पण कर देंगे।।भग.।।

अगणित सुरगण आके, प्रभु पूजन करते हैं।
गणधर गुरु मुनिगण भी, नित वंदन करते हैं।।
हम तेरे पावन चरणों को, निज मन दर्पण में रख लेंगे।।2।।भग.।।

समरस जल मिल जावे, इस हेतू जल पूजा।
इच्छित फल देने में, नहिं तुम सम है दूजा।।
हम प्रभु पद का आराधन कर, भव दुःख को विसर्जन कर देंगे।।3।।भग.।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्यक्त्वज्ञानदर्शनवीर्यसूक्ष्मअवगाहन-अगुरुलघु-अव्याबाधअष्टगुणसमन्विताय सिद्धाधिपतये जलं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

सिद्धों की शरण में आये हैं, तन मन धन अर्पण कर देंगे।
भगवान-भगवान तेरी भक्ती के लिए, जीवन भी समर्पण कर देंगे-2।।टेक.।।

चंदन चंदा किरणें, नहिं शीतल कर सकते।
तुम पद अर्चा करने, केशर चंदन घिसके।।
भवताप शांत करने के लिए, चरणों में चर्चन कर देंगे।।भग.।।1।।

श्रावकगण मिल करके, जिन मंदिर आते हैं।
मिथ्यात्व अंधेर भगा, समकित रवि पाते हैं।।
हम विषयों की इच्छाओं को, चरणों में तर्पण कर देंगे।।भग.।।2।।

प्रभु तुम वचनामृत से, मन शीतल होता है।
मन वच तन पावन हों, सुख झरना झरता है।।
प्रभु तुम पद की पूजा करके, स्वात्मा का दर्शन कर लेंगे।।भग.।।3।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-वीर्य-सूक्ष्म-अवगाहन-अगुरुलघु-अव्याबाध-अष्टगुणसमन्विताय सिद्धाधिपतये चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

सिद्धों की शरण में आये हैं, तन मन धन अर्पण कर देंगे।
भगवान-भगवान तेरी भक्ती के लिए, जीवन भी समर्पण कर देंगे-2।।टेक.।।

निज सुख के खंड हुए, नहिं अक्षय पद पाये।
सित अक्षत ले करके, तुम पास प्रभो! आये।।
अविनश्वर सुख पाने के लिए, सित पुंज समर्पण कर देंगे।।भग.।।1।।

चारण ऋषि निशदिन ही, हृदयाम्बुज में ध्याते।
सुरगण विद्याधर ही, वंदन कर हरषाते।।
निज को निज में ध्याने के लिए, रागादि विसर्जन कर देंगे।।भग.।।2।।

तुम भक्ति अकेली ही, दुर्गति वारण करती।
संपूर्ण सौख्य भरके, शिवमारग में धरती।।
तुम चरणों शीश झुका करके, स्वात्मा को पावन कर लेंगे।।भग.।।3।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्यक्त्वज्ञानदर्शनवीर्यसूक्ष्मअवगाहन-अगुरुलघु-अव्याबाध-अष्टगुणसमन्विताय सिद्धाधिपतये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

सिद्धों की शरण में आये हैं, तन मन धन अर्पण कर देंगे।
भगवान-भगवान तेरी भक्ती के लिए, जीवन भी समर्पण कर देंगे-2।।टेक.।।

प्रभु कामदेव नृप ने, त्रिभुवन को वश्य किया।
इससे बचने हेतू, बहु सुरभित पुष्प लिया।।
निज आत्मगुणों की सुरभि हेतु, पुष्पों को समर्पण कर देंगे।।भग.।।1।।

सुर अप्सरियाँ आके, प्रभु के गुण गाती हैं।
वीणा को बजा करके, बहु पुण्य कमाती हैं।।
शुभ पुण्यार्जन करने के लिए, पापों का विसर्जन कर देंगे।।भग.।।2।।

निज आत्म रसास्वादी, मुनिगण ब्रह्मचर्य धरें।
वे परमानंद मगन, निःशंक सदा विहरें।।
निज आत्म सुरभि पाने के लिए, दुर्भाव विसर्जन कर देंगे।।भग.।।3।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्यक्त्वज्ञानदर्शनवीर्यसूक्ष्म-अवगाहन-अगुरुलघु-अव्याबाध-अष्टगुणसमन्विताय सिद्धाधिपतये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

सिद्धों की शरण में आये हैं, तन मन धन अर्पण कर देंगे।
भगवान-भगवान तेरी भक्ती के लिए, जीवन भी समर्पण कर देंगे-2।।टेक.।।

बहुविध पकवान चखे, नहिं भूख मिटा पाये।
इस हेतू चरु लेकर, तुम निकट प्रभो! आये।।
निजआत्मा की तृप्ती के लिए, नैवेद्य समर्पण कर देंगे।।भग.।।1।।

ज्ञानामृत भोजन से, मुनिगण संतृप्त हुये।
उपवास विविध करके, मन से अतिपुष्ट हुये।।
परमामृत भोजन के ही लिए, निज मन को पावन कर लेंगे।।भग.।।2।।

नानाविध व्याधि व्यथा, तन मन को कृश करती।
हे देव! तेरी पूजा, अतिशय शक्ती भरती।।
निज परमामृत पाने के लिए, इन्द्रिय सुख तर्पण कर देंगे।।भग.।।3।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्यक्त्वज्ञानदर्शनवीर्यसूक्ष्म-अवगाहन-अगुरुलघु-अव्याबाध-अष्टगुणसमन्विताय सिद्धाधिपतये नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

सिद्धों की शरण में आये हैं, तन मन धन अर्पण कर देंगे।
भगवान-भगवान तेरी भक्ती के लिए, जीवन भी समर्पण कर देंगे-2।।टेक.।।

त्रिभुवन में अंधेरा है, अज्ञान तिमिर छाया।
इस हेतू दीपक से, प्रभु पास अभी आया।।
निज ज्ञान ज्योति पाने के लिए, आरति अवतारन कर लेंगे।।भग.।।1।।

श्रुतज्ञानज्योतिधारी, मुनि वंदन करते हैं।
खेचर विद्याधरियाँ, बहु नर्तन करते हैं।।
हम निज शांती पाने के लिए, अज्ञान विसर्जन कर देंगे।।भग.।।2।।

श्रुतज्ञान परोक्ष कहा, फिर भी त्रिभुवन जाने।
भक्ती से मिल जावे, मुनि इससे भव हाने।।
कैवल्य किरण पाने के लिए, स्वात्मा का चिंतन कर लेंगे।।भग.।।3।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्यक्त्वज्ञानदर्शनवीर्यसूक्ष्म-अवगाहन-अगुरुलघु-अव्याबाध-अष्टगुणसमन्विताय सिद्धाधिपतये दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

सिद्धों की शरण में आये हैं, तन मन धन अर्पण कर देंगे।
भगवान-भगवान तेरी भक्ती के लिए, जीवन भी समर्पण कर देंगे-2।।टेक.।।

कर्मों ने दुःख दिया, तुम कर्म रहित स्वामी।
अतएव धूप लेके, हम आये जगनामी।।
सब कर्म जलाने के ही लिए, यह धूप दहन हम कर देंगे।।भग.।।1।।

मुनिगण ध्यानाग्नी में, सब कर्म जलाते हैं।
श्रावक भक्ती नद में, पापों को बहाते हैं।।
समकित निधि पाने के ही लिए, मिथ्यात्व विसर्जन कर देंगे।।भग.।।2।।

बारह विध तप तप के, प्रभु तुम ही शुद्ध हुये।
कर्मांजन को धोके, प्रभु सिद्ध प्रसिद्ध हुए।।
हम आठ गुणों की पूजा कर, स्वात्मा का दर्शन कर लेंगे।।भग.।।3।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्यक्त्वज्ञानदर्शनवीर्यसूक्ष्म-अवगाहन-अगुरुलघु-अव्याबाध-अष्टगुणसमन्विताय सिद्धाधिपतये धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

सिद्धों की शरण में आये हैं, तन मन धन अर्पण कर देंगे।
भगवान-भगवान तेरी भक्ती के लिए, जीवन भी समर्पण कर देंगे-2।।टेक.।।

बहुविध के फल खाये, नहिं रसना तृप्त हुई।
ताजे फल ले करके, प्रभु पूजें बुद्धि हुई।।
इच्छाओं की पूर्ती के लिए, तुम ढिग फल अर्पण कर देंगे।।भग.।।1।।

सुरपति नरपति पूजें, इच्छित फल पाते हैं।
ऋषिगण चित में ध्याते, शिवपद पा जाते हैं।।
हम उत्तम फल पाने के लिए, विधिवत् प्रभु अर्चन कर लेंगे।।भग.।।2।।

परमामृत के इच्छुक, प्रभु अर्चा करते हैं।
शुद्धात्मा बनने को, तुम चर्चा करते हैं।।
निज परमानंद सौख्य हेतू, प्रभु गुण यश कीर्तन कर लेंगे।।भग.।।3।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्यक्त्वज्ञानदर्शनवीर्यसूक्ष्म-अवगाहन-अगुरुलघु-अव्याबाध-अष्टगुणसमन्विताय सिद्धाधिपतये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

सिद्धों की शरण में आये हैं, तन मन धन अर्पण कर देंगे।
भगवान-भगवान तेरी भक्ती के लिए, जीवन भी समर्पण कर देंगे-2।।टेक.।।

मिथ्या अविरति वश हो, अरु कषाय योगों से।
कर्मों का आस्रव भी, प्रतिक्षण हो आत्मा में।।
हम आस्रव के रोधन के लिए, प्रभु अर्घ्य समर्पण कर देंगे।।भग.।।1।।

रत्नत्रय निधि स्वामी, मुनिगण तुम गुण गाते।
सम्यक्त्व रत्नधारी, सुरगण पूजें आके।।
हम रत्नत्रय प्राप्ती के लिए, तुम गुणमणि कीर्तन कर लेंगे।।भग.।।2।।

प्रभु तुम गुण की अर्चा, भवतारणहारी है।
भवदधि डूबे जन को, अवलंबनकारी है।।
संसार जलधि तिरने के लिए, प्रभु का अवलंबन ले लेंगे।।भग.।।3।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्यक्त्वज्ञानदर्शनवीर्यसूक्ष्म-अवगाहन-अगुरुलघु-अव्याबाध-अष्टगुणसमन्विताय सिद्धाधिपतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

—शेर छंद—

हे नाथ! आप वच पवित्र गंगधार हैं।
अवगाहते जो उसमें वो भव से पार हैं।।
तुम वचनगंग से यहाँ कुछ बूंद हम भरें।
प्रभु पद कमल में धार दें संसार से तिरें।।10।।

शांतये शांतिधारा।।

हे नाथ! श्रुतस्कंध बगीचा महान है।
बहुविध के खिले पुष्प से अनुपम निधान है।।
कुछ पुष्प चुन के प्रभु चरण पुष्पांजलि करें।
निज गुण सुगंधि से समस्त विश्व को भरें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

(आठ गुणों के आठ अर्घ्य)

—दोहा—

प्रभु अनंत गुण के धनी, शुद्ध सिद्ध भगवंत।
मुख्य आठ गुण को नमूँ, पुष्पांजलि विकिरंत।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि प्रथमवलये (प्रथमदले) पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(तर्ज-आवो बच्चों तुम्हें दिखायें......)

आओ हम सब करें अर्चना, सिद्धचक्र भगवान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।1।।
दर्शनमोहनीय है त्रयविध, चार अनंतानूबंधी।
मोहकर्म को नाश जिन्होंने, पाया क्षायिक समकित भी।।

इस गुण से अगणित गुण पाये, उन गुणमणि श्रीमान की।
सिद्धशिला पर राज रहे जो उन अनंत गुणखान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।2।।

वर्ण स्पर्श गंध रस विरहित, शुद्ध अमूर्तिक आत्मा है।
जिनने प्रगट किया निज गुण को, वे प्रबुद्ध परमात्मा हैं।।
गुण गाथा हम गायें निशदिन, ज्योतीपुंज महान की।
सिद्धशिला पर राज रहे जो उन अनंत गुणखान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वगुणसहित अनाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

आवो हम सब करें अर्चना सिद्धचक्र भगवान की।
सिद्धशिला पर राज रहे जो, उन अनंत गुणखान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।1।।

ज्ञानावरण कर्म को नाशा, पूर्णज्ञान प्रगटाया है।
युगपत् तीन लोक त्रयकालिक, जान ज्ञान फल पाया है।।
शत इन्द्रों से वंद्य सदा जो, उन आदर्श महान की।
सिद्धशिला पर राज रहे जो, उन अनंत गुणखान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।2।।

चौदह गुणस्थान से विरहित, शुद्ध निरंजन आत्मा है।
जिनने निज का ध्यान किया है, वे विशुद्ध सिद्धात्मा हैं।।
मुनियों से भी वंद्य सदा हैं, उन प्रभु ज्योतिर्मान की।
सिद्धशिला पर राज रहे जो, उन अनंत गुणखान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।3।।

ॐ ह्रीं ज्ञानगुणसहित अनाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

आवो हम सब करें अर्चना, सिद्धचक्र भगवान की।
सिद्ध शिला पर राज रहे जो, उन अनंत गुणखान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।1।।

सर्व दर्शनावरण घात कर, केवल दर्शन प्रगट किया।
युगपत् तीन लोक त्रैकालिक, सब पदार्थ को देख लिया।।
जिनको गणधर गुरु भी ध्याते, उन दृष्टा भगवान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।2।।

चौदह जीव समास सहित ये, संसारी जीवात्मा हैं।
इनसे विरहित नित्य निरंजन, शुद्ध बुद्ध परमात्मा हैं।।
योगीश्वर भी वंदन करते, सर्वदर्शि भगवान की।
सिद्धशिला पर राज रहे जो, उन अनंत गुणखान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।3।।

ॐ ह्रीं दर्शनगुणसहित अनाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

आवो हम सब करें अर्चना, सिद्धचक्र भगवान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।1।।

अंतराय शत्रू के विजयी, शक्ति अनंती प्रगटाई।
काल अनंतानंते तक भी, तिष्ठ रहे प्रभु श्रम नाहीं।।
हम भी करते निज उपासना, अनंत शक्तीमान की।
सिद्धशिला पर राज रहे जो, उन अनंत गुणखान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।2।।

दशों द्रव्य प्राणों से प्राणी, जन्म मरण नित करता है।
निश्चयनय से शुद्ध चेतना, प्राण एक ही धरता है।।
एक प्राण के हेतु वंदना, शुद्धचेतनावान की।

सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंतगुणखान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।3।।

ॐ ह्रीं वीर्यगुणसहित अनाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

आवो हम सब करें अर्चना, सिद्धचक्र भगवान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।1।।

सूक्ष्मत्व गुण पाया जिनने, नामकर्म का नाश किया।
सूक्ष्म और अंतरित दूरवर्ती, पदार्थ को जान लिया।।
योगीश्वर के ध्यानगम्य जो, अचिन्त्य महिमावान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।2।।

आहारेन्द्रिय आयू श्वासोच्छ्वास वचन मन पर्याप्ती।
इनसे विरहित शुद्ध चिदात्मा, में असंख्य गुण की व्याप्ती।।
मुनि के हृदय कमल में तिष्ठें, उन गुणरत्न निधान की।
सिद्धशिला पर राजे रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।3।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मगुणसहित अनाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

आवो हम सब करें अर्चना, सिद्धचक्र भगवान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनन्त गुणखान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।1।।

आयु कर्म से शून्य जिन्होंने, अवगाहन गुण पाया है।
जिनमें सिद्ध अनंतानंतों ने, अवगाहन पाया है।।
भविजन कमल खिलाते हैं जो, उन अतुल्य भास्वान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।2।।

संज्ञा हैं आहार व भय, मैथुन परिग्रह संसार में।
इनसे शून्य सिद्ध परमात्मा, तृप्त ज्ञान आहार में।।
सिद्धों का वंदन जो करते, मिले राह कल्याण की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।आवो.।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।3।।

ॐ ह्रीं अवगाहनगुणसहित अनाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

आवो हम सब करें अर्चना, सिद्धचक्र भगवान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।1।।

ऊँच नीच विध गोत्रकर्म को, ध्यान अग्नि में भस्म किया।
अगुरुलघू गुण से अनंत युग, तक निज में विश्राम किया।।
त्रिभुवन के गुरु माने हैं जो, उन अविचल गुणवान की।।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।2।।

चतुर्गती के नाना दुःखों, से जो जन अकुलाये हैं।
वे ही पूजा भक्ती करने, चरण शरण में आये हैं।।
मैं भी भक्ती करके छूटूँ, उन श्रीसिद्ध महान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।3।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघुगुणसहित अनाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

आवो हम सब करें अर्चना, सिद्धचक्र भगवान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।1।।

सात असाता द्विविध वेदनी, ध्यान अग्नि से जला दिया।
अव्याबाध सुखामृत पीकर, निज से निज को तृप्त किया।।
भक्ति नाव से भव्य तिरें जो, उन शुद्धात्म महान की।

सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।2।।

शारीरिक मानस आगंतुक, नाना दुःख उठाये हैं।
जो इन दुःखों से विरहित हैं, शरण उन्हीं की आये हैं।।
स्वात्म सुखामृत पीने हेतू, शरण सिद्ध भगवान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।3।।

ॐ ह्रीं अव्याबाधगुणसहित अनाहतपराक्रमाय सकलकर्ममुक्तसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

–पूर्णार्घ्य –

आवो हम सब करें अर्चना, सिद्धचक्र भगवान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।1।।

शुक्लध्यान की अग्नि जलाकर, आठ कर्म को भस्म किया।
केवलज्ञान सूर्य को पाकर, आठ गुणों को व्यक्त किया।।
सिद्धों का जो वंदन करते, मिले राह कल्याण की।
सिद्धशिला पर तिष्ठ रहे जो, उन अनंत गुणखान की।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।2।।

यह अपार भवसागर भव्यों, दुःख नीर से भरा हुआ।
इसको पार करें हम सब जन, भक्ति नाव अवलंब लिया।।
सिद्धों का जो वंदन करते, मिले राह कल्याण की।
सिद्धशिला पर तिष्ठ रहे जो, उन अनंत गुणखान की।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व-ज्ञानदर्शनवीर्यसूक्ष्म-अवगाहन-अगुरुलघु-अव्याबाध-अष्टगुणसहित-अनाहतपराक्रमेभ्यः सकलकर्ममुक्तसिद्धपरमेष्ठिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा नमः।**

जयमाला

–शंभु छंद –

हे नाथ! तुम्हारे गुणमणि की, जयमाल गूंथ कर लाये हैं।
हम आज तुम्हारे चरणों में, यह माल चढ़ाने आये हैं।।
जय जय अतीत के सिद्धों की, जय वर्तमान के सिद्धों की।
जय जय भविष्य के सिद्धों की, सब सिद्ध अनंतानंतों की।।1।।

जैसे नर कटि पर हाथ रखे, पग फैलाकर खड़ा हुआ।
वैसे यह पुरुषाकार लोक, त्रैलोक्य स्वरूप विभक्त हुआ।।
त्रिभुवन के मस्तक पर ईषत्-प्राग्भारा अष्टम पृथ्वी है।
यह पूर्वापर इक राजु सात, राजू उत्तर-दक्षिण में हैं।।2।।

यह योजन आठ मात्र मोटी, इस भूमि मध्य है सिद्ध शिला।
योजन पैंतालिस लाख प्रमित यह गोल रजतमय सिद्ध शिला।।
उत्तान कटोरे[1] सम या धवल छत्र या अर्धचंद्रसम है।
यह मध्य में मोटी आठ योजन क्रम से घट के इक प्रदेश है।।3।।

इस ऊपर वातवलयत्रय हैं, दो कोस घनोदधि वात वलय।
घनवात वलय है एक कोस, फिर ऊपर में तनुवातवलय।।
यह चार शतक पच्चीस धनुष कम, एक कोस का माना है।
या पंद्रह सौ पचहत्तर धनु का यह तनुवात[2] बखाना है।।4।।

इसके व्यवहार धनुष करने को पांचशतक से गुणा करो।
फिर पंद्रह सौ से भाजित कर पण सौ पचीस धनु प्राप्त करो।।

---

1. तन्मध्ये रूप्यमयं छत्राकारं मनुष्यक्षेत्रव्यास सिद्ध क्षेत्रमस्ति।...अंते तनुरूपमुत्तानस्थित-पात्रमिवचषकमिवेत्यर्थः....आठवीं पृथ्वी के ठीक बीच में छत्राकार मनुष्य क्षेत्र व्यास प्रमाण-4500000 योजन प्रमाण सिद्धक्षेत्र या सिद्धशिला है। यह अंत में कृश हुई है और सीधे रखे कटोर के समान है। या धवल छत्र के समान है-उल्टे रखे हुए छत्र के समान है। त्रिलोकसार गाथा 557 की टीका का अंश।

2. तनुवातवलय 1575 धनुष है यह प्रमाणांगुल से है अतः इसके व्यवहारांगुल से व्यवहार धनुष बनाने के लिए 500 से गुणा करना है। क्योंकि मनुष्यों के शरीर की अवगाहना व्यवहार धनुष से ही है। यथा 1575×500=787500 हुआ। इसमें 1500 से भाग देने से अर्थात् 787500÷1500=525 धनुष हुआ। यह सिद्धों की उत्कृष्ट अवगाहना है।

यह सिद्धों का उत्कृष्ट देह दो सहस एक सौ हाथ कहा।
सबसे लघु साढ़े तीन हाथ, मध्यम सब मध्यम भेद कहा।।5।।

लघु मध्यम उत्तम अवगाहन से सिद्ध अनंतानंत वहाँ।
तनुवातवलय के अंत भाग में तिष्ठ रहे हैं सतत वहाँ।।
धर्मास्तिकाय के अभाव से ये सिद्ध न आगे जा सकते।
त्रैलोक्य गगन के चउतरफे बस एक अलोकाकाश बसे।।6।।

ये सिद्ध सभी रस रूप गंध, स्पर्श रहित शुद्धात्मा हैं।
चिन्मय चिंतामणि कल्पवृक्ष पारसमणि रत्न चिदात्मा हैं।।
निश्चयनय से हम सभी शुद्ध, चिन्मूरति परम चिदंबर हैं।
व्यवहार नयाश्रित संसारी, निश्चय से शुद्ध शिवंकर हैं।।7।।

निज के गुणमणि को प्रगट करें, इसलिए अर्चना करते हैं।
सज्ज्ञानमती कैवल्य करो, बस यही याचना करते हैं।।
हे नाथ! तुम्हारे गुणमणि की, जयमाल गूंथ के लाये हैं।
हम आज तुम्हारे चरणों में, यह माल चढ़ाने आये हैं।।8।।

—दोहा—

सिद्ध अनंतानंत को, नमत मिटे दुःख शोक।
'ज्ञानमती' कलिका खिले, सुरभित हो तिहुँलोक।।9।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्यक्त्वज्ञानदर्शनवीर्यसूक्ष्म-अवगाहन-अगुरुलघु-अव्याबाध-रूप-अष्टगुण-समन्वितेभ्यः सिद्धपरमेष्ठिभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

—शेरछंद—

जो भव्य कर्मदहन का विधान करेंगे।
वे भावकर्म द्रव्यकर्म दहन करेंगे।।
निज का परम अतीन्द्रिय सुख प्राप्त करेंगे।
रवि 'ज्ञानमती' से यहाँ प्रकाश भरेंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

—दोहा—

महावीर शासन प्रथित, नमन करूँ शत बार।
कुंदकुंद गुरुदेव को, वंदूं भक्ति अपार।।1।।

कुंदकुंद आम्नाय में, गच्छ सरस्वति मान्य।
बलात्कारगण सिद्ध है, उनमें सूरि प्रधान।।2।।

गुरु शांतिसागर हुये, चारित्र चक्री मान्य।
उनके पट्टाचार्य थे, वीरसिंधु प्राधान्य।।3।।

देकर दीक्षा आर्यिका, दिया ज्ञानमति नाम।
गुरुवर कृपा प्रसाद से, सार्थ हुआ कुछ नाम।।4।।

जिनवर भक्त्या प्रेरिता, कल्पद्रुमादि विधान।
डेढ़ शतक ग्रंथादि रच, किया स्वपर कल्याण।।5।।

हस्तिनापुर में वीर संवत, पचीस सौ उन्नीस।
पौष शुक्ल पंचमि तिथी, नमूँ सिद्ध नत शीश।।6।।

कर्मदहन पूजाविधी, पूर्ण किया धर प्रीति।
कर्मदहन होंगे सहज, यही जिनागम नीति।।7।।

जब तक तीर्थ सुमेरु है, जब तक श्रीजिनधर्म।
तब तक रहे विधान यह, करे जगत में शर्म[1]।।8।।

इति कर्मदहनविधान प्रशस्ति

।।शं भूयात्।।

1. सुख।

आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

ॐ जय जय कर्मजयी, स्वामी जय जय कर्मजयी।
ध्यान अग्नि से कर्म दहन कर, बन गए मृत्युजयी ।।ॐ जय.।।टेक.।।

मानव जन्म अमोल रतन पा, मुनि पद जो धरते-स्वामी।
त्याग तपस्या द्वारा, शिवपद को वरते।।।।ॐ जय.।।1।।

घाति कर्म को क्षय कर, केवलज्ञान मिले ....स्वामी।
पा अरिहन्त अवस्था, दिव्यध्वनी खिरे ।।ॐ जय.।।2।।

शेष अघाति नशाकर, सिद्धशिला पाते.........स्वामी।
काल अनन्त बिताकर, फिर न यहाँ आते ।।ॐ जय.।।3।।

इन्द्रियविजयी नर ही, कर्मजयी बनते ....स्वामी।
तभी पंचपरमेष्ठी, परम पूज्य बनते ।।ॐ जय.।।4।।

प्रभु आरति से हम भी, ऐसी शक्ति लहें........स्वामी।
शीघ्र ''चंदनामती'' मुक्ति के, पथ की युक्ति गहें ।।ॐ जय.।।5।।

भजन

-ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

तर्ज - मनिहारों का रूप.........

सिद्ध प्रभुवर को मन में ध्याओ। अपनी आत्मा को कुन्दन बनाओ।।टेक.।।

आठ कर्म कहे शास्त्र में मुख्य हैं,
भेद उत्तर तो इक सौ अड़तालिस कहे,
नष्ट करने की युक्ती जो पाओ, अपनी आत्मा को कुन्दन बनाओ।
सिद्ध...।।1।।

प्राणी पुण्य उदय से तपस्या करे,
अष्ट कर्मों को नाशा तो सिद्ध बने।
उन्हीं सिद्धों की पूजा रचाओ, अपनी आत्मा को कुन्दन बनाओ।।
सिद्ध...।।3।।

इक सौ सत्तर करमभूमि मानी गईं,
ढाई द्वीपों में हैं ये बखानी गईं।
उन सभी सिद्धों को शिर नमाओ, अपनी आत्मा को कुन्द बनाओ।
सिद्ध...।।3।।

घातिया कर्म को नाश अरिहंत हों,
जब अघाती नशें तब बनें सिद्ध वो।
भावना उन सम बनने की भाओ, अपनी आत्मा को कुन्दन बनाओ।
सिद्ध...।।4।।

ज्ञानमती माताजी ने ये पाठ रचा।
भक्ति से मुक्ति पाने का माध्यम दिया।।
'इन्दु सब मिलके गुण उनके गाओ, अपनी आत्मा को कुन्दन बनाओ।।5।।

विधान का नक्शा

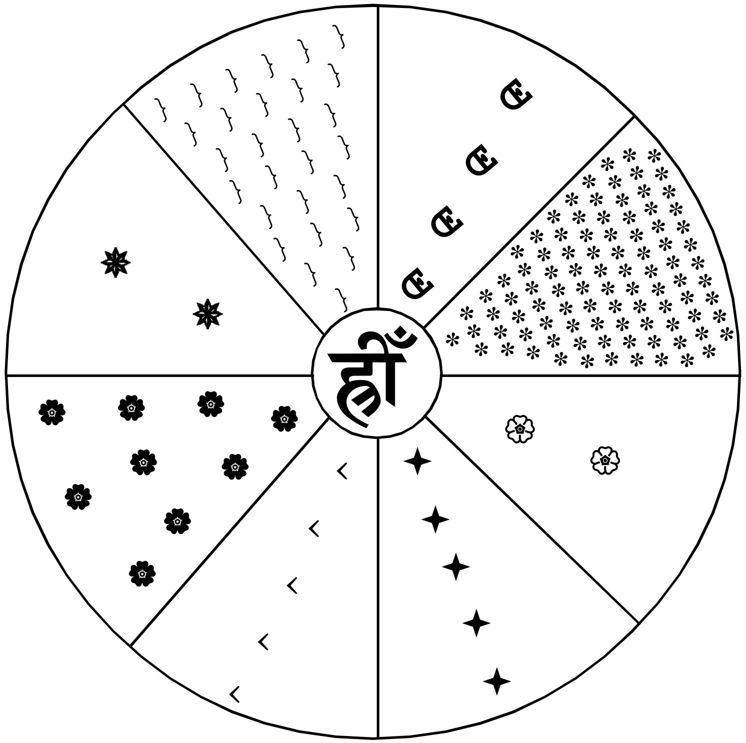

प्रथम वलय में	–5 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य
द्वितीय वलय में	–9 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य
तृतीय वलय में	–2 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य
चतुर्थ वलय में	–28 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य
पंचम वलय में	–4 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य
षष्ठम वलय में	–93 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य
सप्तम वलय में	–2 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य
अष्टम वलय में	–5 अर्घ्य 3 पूर्णार्घ्य
कुल	**–148 अर्घ्य 10 पूर्णार्घ्य**

कर्मदहन व्रत विधि

ज्ञानावरणादि 8 कर्मों की 148 प्रकृतियों को नाश करने के लिए और आत्मशुद्धि के लिए कर्मदहन व्रत करने की और उसका विधान करने की प्रथा दिगम्बर जैन समाज में प्रचलित है।

इस कर्मदहन व्रत के 156 उपवास करने पड़ते हैं अर्थात् कर्म की 148 प्रकृतियों के 148 उपवास और कर्म नाश होने के बाद सिद्धों के जो आठ गुण प्राप्त होते हैं उनके 8 उपवास करने पड़ते हैं। ये उपवास चाहे जिस दिन नहीं करने चाहिए। निम्न तिथियों में ये 156 उपवास पूर्ण करने चाहिए।

1. चौथे गुणस्थान में 7 प्रकृतियों का नाश होता है, इसलिए चतुर्थी के 7 उपवास करें।
2. सातवें गुणस्थान में 3 प्रकृतियों का नाश होता है, इसलिए सप्तमी के 3 उपवास करें।
3. नौवें गुणस्थान में 36 प्रकृतियों का नाश होता है, इसलिए नवमी के 36 उपवास करें।
4. दसवें गुणस्थान में 1 प्रकृति का नाश होता है, इसलिए दशमी का 1 उपवास करें।
5. बारहवें गुणस्थान में 16 प्रकृतियों का नाश होता है, इसलिए बारस के 16 उपवास करें।
6. चौदहवें गुणस्थान में 85 प्रकृतियों का नाश होता है, इसलिए चौदश के 85 उपवास करें।
7. सिद्धों के अष्टगुणों के कारण अष्टमी के 8 उपवास करें।

इस प्रकार 7+3+36+1+16+85+8=156 उपवास कर्मदहन व्रत के करने चाहिए तथा हर एक उपवास के दिन गृहारम्भ का त्याग करके ब्रह्मचर्य धारण कर स्नानादि क्रिया से शरीर तथा वस्त्र की शुद्धि करके श्री जिनालय में आकर श्री अर्हंत भगवान का पंचामृताभिषेक करके देव-शास्त्र-गुरुपूर्वक श्री सिद्धपूजा करें। फिर 108 जाप्य देवें। कुल 156 जाप्य

हैं। उनमें हर एक उपवास के दिन क्रमशः एक-एक जाप्य को 108 बार जपना चाहिए।

ये उपवास प्रोषधोपवास ही करने चाहिए अर्थात् पहले दिन एकाशन करके उपवास करें और फिर दूसरे दिन एकाशन करें। इसको प्रोषधोपवास कहते हैं।

यह कर्मदहनव्रत (156 उपवास) पूर्ण होने पर फिर उद्यापन करें। उसमें श्री जिनमंदिर में यथाशक्ति अष्ट मंगल द्रव्य और उपकरणादि चढ़ावें तथा मांडना मांड कर वृहत् अभिषेक, जलशुद्धि व सकलीकरणादि को विधिपूर्वक करके यह कर्मदहन व्रत विधान मंगलाष्टक, पुण्याहवाचन व शांतिविसर्जनपूर्वक करें, फिर यथाशक्ति चारों प्रकार का दान करें। उनमें खास करके जैन संस्थाओं के लिए अच्छी रकम विद्यादान में अवश्य निकालें तथा कम से कम 156 शास्त्रों का दान करें। यदि उद्यापन करने की शक्ति न हो तो यह व्रत दूना करना चाहिए।

चतुर्थी के 7 उपवास के सात मंत्र

1. ॐ ह्रीं मिथ्यात्व-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
2. ॐ ह्रीं सम्यक्मिथ्यात्व-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
3. ॐ ह्रीं मिश्र-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
4. ॐ ह्रीं अनन्तानुबंधिक्रोध-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
5. ॐ ह्रीं अनन्तानुबंधिमान-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
6. ॐ ह्रीं अनन्तानुबंधिमाया-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
7. ॐ ह्रीं अनन्तानुबंधिलोभ-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

सप्तमी के 3 उपवास के तीन मंत्र

1. ॐ ह्रीं नारकायुष्कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
2. ॐ ह्रीं तिर्यगायुष्कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
3. ॐ ह्रीं देवायुष्कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

नवमी के 36 उपवास के छत्तीस मंत्र

1. ॐ ह्रीं निद्रानिद्रा-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

2. ॐ ह्रीं प्रचलाप्रचला-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
3. ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धि-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
4. ॐ ह्रीं नरकगति-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
5. ॐ ह्रीं तिर्यग्गति-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
6. ॐ ह्रीं नरकगत्यानुपूर्वी-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
7. ॐ ह्रीं तिर्यग्गत्यानुपूर्वी-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
8. ॐ ह्रीं एकेन्द्रिय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
9. ॐ ह्रीं द्विन्द्रिय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
10. ॐ ह्रीं त्रीन्द्रिय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
11. ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रिय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
12. ॐ ह्रीं स्थावर-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
13. ॐ ह्रीं आतप-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
14. ॐ ह्रीं उद्योत-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
15. ॐ ह्रीं परघात-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
16. ॐ ह्रीं सूक्ष्म-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
17. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणक्रोध-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
18. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमान-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
19. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमाया-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
20. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणलोभ-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
21. ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणक्रोध-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
22. ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमान-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
23. ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमाया-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
24. ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणलोभ-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
25. ॐ ह्रीं नपुंसकवेद-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
26. ॐ ह्रीं स्त्रीवेद-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
27. ॐ ह्रीं पुरुषवेद-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
28. ॐ ह्रीं हास्य-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
29. ॐ ह्रीं रति-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

30. ॐ ह्रीं अरति-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
31. ॐ ह्रीं शोक-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
32. ॐ ह्रीं भय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
33. ॐ ह्रीं जुगुप्सा-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
34. ॐ ह्रीं संज्वलनक्रोध-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
35. ॐ ह्रीं संज्वलनमान-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
36. ॐ ह्रीं संज्वलनमाया-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

दशमी के 1 उपवास के एक मंत्र

1. ॐ ह्रीं संज्जवलनलोभ-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

बारस के 16 उपवास के सोलह मंत्र

1. ॐ ह्रीं निद्रा-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
2. ॐ ह्रीं प्रचला-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
3. ॐ ह्रीं मतिज्ञानावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
5. ॐ ह्रीं अवधिज्ञानावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
6. ॐ ह्रीं मनःपर्ययज्ञानावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
7. ॐ ह्रीं केवलज्ञानावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
8. ॐ ह्रीं चक्षुर्दर्शनावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
9. ॐ ह्रीं अचक्षुर्दर्शनावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
10. ॐ ह्रीं अवधिदर्शनावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
11. ॐ ह्रीं केवलदर्शनावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
12. ॐ ह्रीं दानांतराय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
13. ॐ ह्रीं लाभान्तराय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
14. ॐ ह्रीं भोगान्तराय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
15. ॐ ह्रीं उपभोगान्तराय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
16. ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

चौदस के 85 उपवास के 85 मंत्र

1. ॐ ह्रीं असातावेदनीय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
2. ॐ ह्रीं औदारिकशरीर-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
3. ॐ ह्रीं वैक्रियिकशरीर-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
4. ॐ ह्रीं आहारकशरीर-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
5. ॐ ह्रीं तैजसशरीर-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
6. ॐ ह्रीं कार्मणशरीर-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
7. ॐ ह्रीं औदारिकबंधन-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
8. ॐ ह्रीं वैक्रियिकबंधन-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
9. ॐ ह्रीं आहारकबंधन-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
10. ॐ ह्रीं तैजसबंधन-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
11. ॐ ह्रीं कार्मणबंधन-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
12. ॐ ह्रीं औदारिकसंघात-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
13. ॐ ह्रीं वैक्रियिकसंघात-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
14. ॐ ह्रीं आहारसंघात-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
15. ॐ ह्रीं तैजससंघात-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
16. ॐ ह्रीं कार्मणसंघात-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
17. ॐ ह्रीं औदारिकाङ्गोपाङ्ग-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
18. ॐ ह्रीं वैक्रियिकाङ्गोपाङ्ग-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
19. ॐ ह्रीं आहारकाङ्गोपाङ्ग-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
20. ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थान-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
21. ॐ ह्रीं न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थान-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
22. ॐ ह्रीं स्वातिसंस्थान-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
23. ॐ ह्रीं वामनसंस्थान-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
24. ॐ ह्रीं कुब्जकसंस्थान-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
25. ॐ ह्रीं हुण्डकसंस्थान-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
26. ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहनन-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
27. ॐ ह्रीं वज्रनाराचसंहनन-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

28. ॐ ह्रीं नाराचसंहनन-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
29. ॐ ह्रीं अर्धनाराचसंहनन-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
30. ॐ ह्रीं कीलकसंहनन-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
31. ॐ ह्रीं असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
32. ॐ ह्रीं श्यामवर्ण-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
33. ॐ ह्रीं हरिद्वर्ण-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
34. ॐ ह्रीं पीतवर्ण-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
35. ॐ ह्रीं अरुणवर्ण-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
36. ॐ ह्रीं श्वेतवर्ण-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
37. ॐ ह्रीं तिक्तरस-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
38. ॐ ह्रीं कडुकरस-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
39. ॐ ह्रीं मधुरस-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
40. ॐ ह्रीं आम्लरस-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
41. ॐ ह्रीं कषायरस-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
40. ॐ ह्रीं मुदुस्पर्श-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
43. ॐ ह्रीं कठोरस्पर्श-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
44. ॐ ह्रीं शीतस्पर्श-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
45. ॐ ह्रीं उष्णस्पर्श-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
46. ॐ ह्रीं रुक्षस्पर्श-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
47. ॐ ह्रीं स्निग्धस्पर्श-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
48. ॐ ह्रीं गुरुस्पर्श-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
49. ॐ ह्रीं लघुस्पर्श-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
50. ॐ ह्रीं सुगंध-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
51. ॐ ह्रीं दुर्गन्ध-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
52. ॐ ह्रीं देवगत्यानुपूर्वी-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
53. ॐ ह्रीं अगुरु-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
54. ॐ ह्रीं लघु-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
55. ॐ ह्रीं उच्छवास-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

56. ॐ ह्रीं उपघात-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
57. ॐ ह्रीं शुभविहायोगति-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
58. ॐ ह्रीं अशुभविहायोगति-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
59. ॐ ह्रीं अपर्याप्त-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
60. ॐ ह्रीं स्थिर-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
61. ॐ ह्रीं अस्थिर-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
62. ॐ ह्रीं शुभ-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
63. ॐ ह्रीं अशुभ-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
64. ॐ ह्रीं दुर्भग-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
65. ॐ ह्रीं सुस्वर-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
66. ॐ ह्रीं दुःस्वर-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
67. ॐ ह्रीं अनादेय-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
68. ॐ ह्रीं अयशो-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
69. ॐ ह्रीं यशो-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
70. ॐ ह्रीं निर्माण-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
71. ॐ ह्रीं नीचगोत्र-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
72. ॐ ह्रीं देवगति-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
73. ॐ ह्रीं सातावेदनीय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
74. ॐ ह्रीं मनुष्यायुः-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
75. ॐ ह्रीं मनुष्यगति-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
76. ॐ ह्रीं मनुष्यगत्यानुपूर्वी-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
77. ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियजाति-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
78. ॐ ह्रीं त्रस-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
79. ॐ ह्रीं बादर-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
80. ॐ ह्रीं पर्याप्ति-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
81. ॐ ह्रीं सुभग-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
82. ॐ ह्रीं आदेय-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
83. ॐ ह्रीं उच्चगोत्र-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

84. ॐ ह्रीं यशो-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

85. ॐ ह्रीं तीर्थंकर-नामकर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

इस प्रकार 148 कर्म-प्रकृतियों का क्षय कर आत्मा मोक्ष को चला जाता है। फिर वह संसार में कभी नहीं आता है। मुक्त आत्मा को सिद्ध कहते हैं सिद्ध अवस्था में उसके अनन्त गुण प्रगट होते हैं उनमें आठ गुण मुख्य हैं। इन आठ गुणों के अष्टमी के आठ उपवास कर प्रत्येक दिन क्रम से नीचे लिखे आठ मंत्रों की जाप देनी चाहिए।

अष्टमी के आठ उपवास के 8 मंत्र

1. ॐ ह्रीं सम्यक्त्व-गुणसहिताय सिद्धाय नमः।
2. ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन-गुणसहिताय सिद्धाय नमः।
3. ॐ ह्रीं अनन्तज्ञान-गुणसहिताय सिद्धाय नमः।
4. ॐ ह्रीं अनन्तवीर्य-गुणसहिताय सिद्धाय नमः।
5. ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्व-गुणसहिताय सिद्धाय नमः।
6. ॐ ह्रीं अमूर्त्तिक-गुणसहिताय सिद्धाय नमः।
7. ॐ ह्रीं अगुरुलघु-गुणसहिताय सिद्धाय नमः।
8. ॐ ह्रीं अव्याबाध-गुणसहिताय सिद्धाय नमः।

भजन

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

अरे, जग जा रे चेतन! नींद से,
तुझे सतगुरु आये जगावन को।।टेक.।।
काल अनादी से इस जग में-2
भ्रमण करे तू चारों गति में-2।
अरे, मोह नींद को दूर भगा,
तुझे सतगुरु आये जगावन को।।1।।
मानुष तन दुर्लभ है जग में-2,
सदुपयोग इसका तू कर ले-2।
अरे, विषय कषाय को त्याग दे,
तुझे सतगुरु आये जगावन को।।2।।
पर का कुछ उपकार भी कर ले-2,
सज्जन का सत्कार भी करले-2।
अरे, कर ले आतम ध्यान भी,
तुझे सतगुरु आये जगावन को।।3।।
सात व्यसन का त्याग तू कर दे-2,
पाँच पाप भी मन से तज दे-2।
अरे, धर्म में कर अनुराग रे,
तुझे सतगुरु आये जगावन को।।4।।
कहे ''चन्दनामती'' सभी से-2,
कर लो मैत्री भाव सभी से-2।
अरे, भज ले प्रभु का नाम रे,
तुझे सतगुरु आये जगवान को।।5।।